दिसंबर-2025 | वर्ष : 09 | अंक : 09 | मूल्य : ₹25/- मात्र

# युगांतर प्रकृति

भारत के पूर्वी राज्यों का एकमात्र पर्यावरण मासिक

# ज़हरीली हवा से सांसों पर संकट

# झारखण्ड 25

## अनंत संभावनाओं की ओर

**मुख्य अतिथि**

**श्री संतोष कुमार गंगवार**

माननीय राज्यपाल, झारखण्ड

**अध्यक्षता**

**श्री हेमन्त सोरेन**

माननीय मुख्यमंत्री, झारखण्ड

**विशिष्ट अतिथि**

**श्री के. राजू**

ए.आई.सी.सी. के सी. डब्ल्यी.सी. के स्थायी आमंत्रित सदस्य एवं झारखण्ड प्रभारी

**सम्मानित अतिथि**

**श्री संजय सेठ**
माननीय केन्द्रीय रक्षा राज्य मंत्री

**श्री राधा कृष्ण किशोर**
माननीय मंत्री, झारखण्ड सरकार

**श्री संजय प्रसाद यादव**
माननीय मंत्री, झारखण्ड सरकार

**श्री दीपक प्रकाश**
माननीय संसद सदस्य, राज्य सभा

**श्रीमती महुआ माजी**
माननीय संसद सदस्य, राज्य सभा

**श्री आदित्य प्रसाद साहु**
माननीय संसद सदस्य, राज्य सभा

**श्री प्रदीप कुमार वर्मा**
माननीय संसद सदस्य, राज्य सभा

**श्री चन्द्रेश्वर प्रसाद सिंह**
माननीय सदस्य, झारखण्ड विधान सभा

स्कैन करें और झारखण्ड राज्य के रजत पर्व उत्सव के सहभागी बनें!

**दिनांक: 15 नवम्बर, 2025 | समय: अपराह्न 02.00 बजे**

**स्थान: मोरहाबादी मैदान, रांची**

सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, झारखण्ड सरकार

# इस अंक में खास...

कवर स्टोरी
08 जहरीली हवा से सांसों पर संकट

18
विशेष दिवस
भारत में सुधरी है चीतों की स्थिति

24
स्पेशल स्टोरी
विलुप्ति के कगार पर सरीसृपों की 30 फीसदी प्रजातियां
दुनिया के द्वीपों पर रहने वाली सरीसृप प्रजातियां, जैसे छिपकलियां और कोमोडो ड्रैगन, विलुप्ति के कगार पर हैं, फिर भी वैज्ञानिक शोधों में उन्हें करीब-करीब अनदेखा किया जा रहा है।





06
विशेष रिपोर्ट
दुनिया में हर साल 1 करोड़ हेक्टेयर वन क्षेत्र की होती है कटाई
वनों की कटाई की दर 1990-2000 के दौरान 17.6 मिलियन हेक्टेयर प्रति वर्ष से घटकर 2015-2025 में 10.9 मिलियन हेक्टेयर प्रति वर्ष हो गई है। हालांकि, इसी अवधि में वनों के विस्तार की दर भी घटी है।

16
वन्य जीव
वन्य जीव संरक्षण की अनदेखी और उभरती चुनौतियां
भारत जैसे जैव विविधता से भरपूर देश में वन्य जीव संरक्षण केवल एक पर्यावरणीय मुद्दा नहीं, बल्कि अस्तित्व का प्रश्न है। हमारा देश 17 मेगा-डाइवर्स देशों में से एक है, जहां चार जैव विविधता हॉटस्पॉट हैं।



18
तालमेल



जंगल और कृषि के बीच जरूरी है तालमेल

30
कला जगत
एआई से चित्रकारों को कोई नुकसान नहीं

# युगांतर प्रकृति

भारत के पूर्वी राज्यों का एकमात्र पर्यावरण मासिक

वर्ष-9, अंक-09, दिसंबर-2025, कुल पृष्ठ-40 (आवरण सहित)

**मुख्य संरक्षक**
सरयू राय

**प्रधान संपादक**
आनंद सिंह

**संपादक**
अंशुल शरण

**संरक्षक मंडल**
राजेन्द्र सिंह, एम.सी. मेहता, प्रो. आर. के. सिन्हा, प्रो. एस. इ. हसनैन, डॉ. आर. एन. शरण, डॉ. आर. के. सिंह

**सलाहकार मंडल**
डॉ. एम. के. जमुआर, डॉ. दिनेश कुमार मिश्र, डॉ. के. के. शर्मा, डॉ. गोपाल शर्मा, डॉ. ज्योति प्रकाश

**डिजाइन आर्टिस्ट**
अनवारूल हक

**विधि परामर्शी**
रवि शंकर (अधिवक्ता)

**प्रबंधन**
राजेश कुमार सिन्हा

**संपादकीय कार्यालय**
संपादकीय, सदस्यता एवं विज्ञापन
नेचर फाउंडेशन, सेंट्रल स्कूल के समीप
पो. नामकूम, सिदरौल, रांची, झारखंड, पिन-834010

**कोलकाता कार्यालय**
ग्राउंड फ्लोर, 131/24, रीजेंट पार्क गवर्नमेंट क्वार्टर,
कोलकाता, पिन-700040

**पटना कार्यालय**
201, दीपराज कॉम्प्लेक्स, आर्य कुमार रोड,
दिनकर गोलंबर, पटना 834004

स्वामी, मुद्रक और प्रकाशक **मधु** द्वारा झारखंड प्रिंटर्स प्रा. लि., 6A, गुरुनानक नगर, साकची, **जमशेदपुर** से मुद्रित व नेचर फाउंडेशन, सेंट्रल स्कूल के समीप पो. नामकूम, सिदरौल, **रांची**, झारखंड से प्रकाशित।
**आरएनआई नंबर: JHAHIN/2016/68667**
**डाक पंजीयन स.: RN/266/2025-27**

ई-मेलः yugantarprakriti@gmail.com
मोबाइल 7307071539, 9304955301/2

■ अपनी बात

# दिसंबर के मायने

■ अंशुल शरण

नमस्कार,

दिसंबर के माह में अपने खान-पान पर विशेष ध्यान दें।
बहुत ज्यादा तला-भुना न खाएं।
भूख कई बार लगेगी, खास कर रात में क्योंकि जाड़े में रातें लंबी होती हैं।
इस बात को ध्यान में रखें कि मोटा अनाज आप जितना खा सकते हैं, खाएं।
जाड़े में कोल्ड अटैक के कई मामले होते हैं।
इनसे आपको बचना है।
हार्ट अटैक के भी केस बढ़ जाते हैं।
इससे भी आपको बचना है।
अगर आप जॉगिंग करते हैं तो थोड़ा विलंब से जाएं क्योंकि मौसम लगातार बदलता है।
ठंडा-गर्म का नुकसान आपको हो सकता है।
कोशिश करें कि पूरे ठंढ भर गुनगुना पानी पीयें।
यह आपके शरीर को अनुकूल रखता है।
थोड़ा घूमें।
प्रकृति का रंग-रुप देखें।
जरा गुलाब को गौर से देखें।
अन्य वृक्षों को भी देखें।
उनकी हरियाली आपको चटख नजर आएगी।
चंपा-चमेली, हरसिंगार और रातरानी की छटा देखते ही बनती है।
रातरानी की खुशबू आपको मदहोश कर देगी।
पालक, केला, सरसों और मूली लगा कर आप दो पैसे कमा भी सकते हैं।
पालक, केला, सरसों और मूली आपके भोजन की थाली में हो तो सोने पे सुहागा।
इसी माह विश्व चीता दिवस है।
इसी माह बंदर दिवस भी है।
कई आयोजन हैं राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर।
आप चाहें तो हिस्सा ले सकते हैं।
थोड़ा चीता के बारे में मनन करें।
थोड़ा बंदरों के बार में भी सोचें।
ये सब प्राणी हमारे पर्यावरण के लिए जरूरी हैं।
ठंड से बचें, युगांतर प्रकृति पढ़ते रहें, पौष्टिक आहार ग्रहण करें और अपनी प्रतिक्रिया जरूर दें कि यह अंक आपको कैसा लगा।
धन्यवाद, मिलते हैं अगले अंक में....

आपका ही

(अंशुल शरण)

# युगांतर भारती

## ने पर्यावरण को जन आंदोलन बना दिया।
## इसके लिए युगांतर भारती को बधाई।
## वास्तव में इस संस्था ने बढ़िया काम किया है।

**-श्री संतोष कुमार गंगवार,** माननीय राज्यपाल, झारखंड

**5 जून 2025 को माननीय राज्यपाल महोदय ने बोकारो के तेलमच्चो में युगांतर भारती के बारे में जो बोला, उसके पीछे संघर्ष की लंबी कहानी है। वह संघर्ष हमारा साथी है। उसी संघर्ष की राह पर हमें आगे भी चलना है और हम संघर्ष करेंगे।**

**जीरो एरर, 100% सटिस्फैक्शन हमारी पहचान है।**

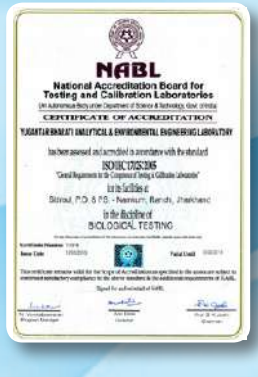

# युगांतर भारती

*भरोसा जीतने का माद्दा*

# 11 दिसंबर–अंतर्राष्ट्रीय पर्वत दिवस

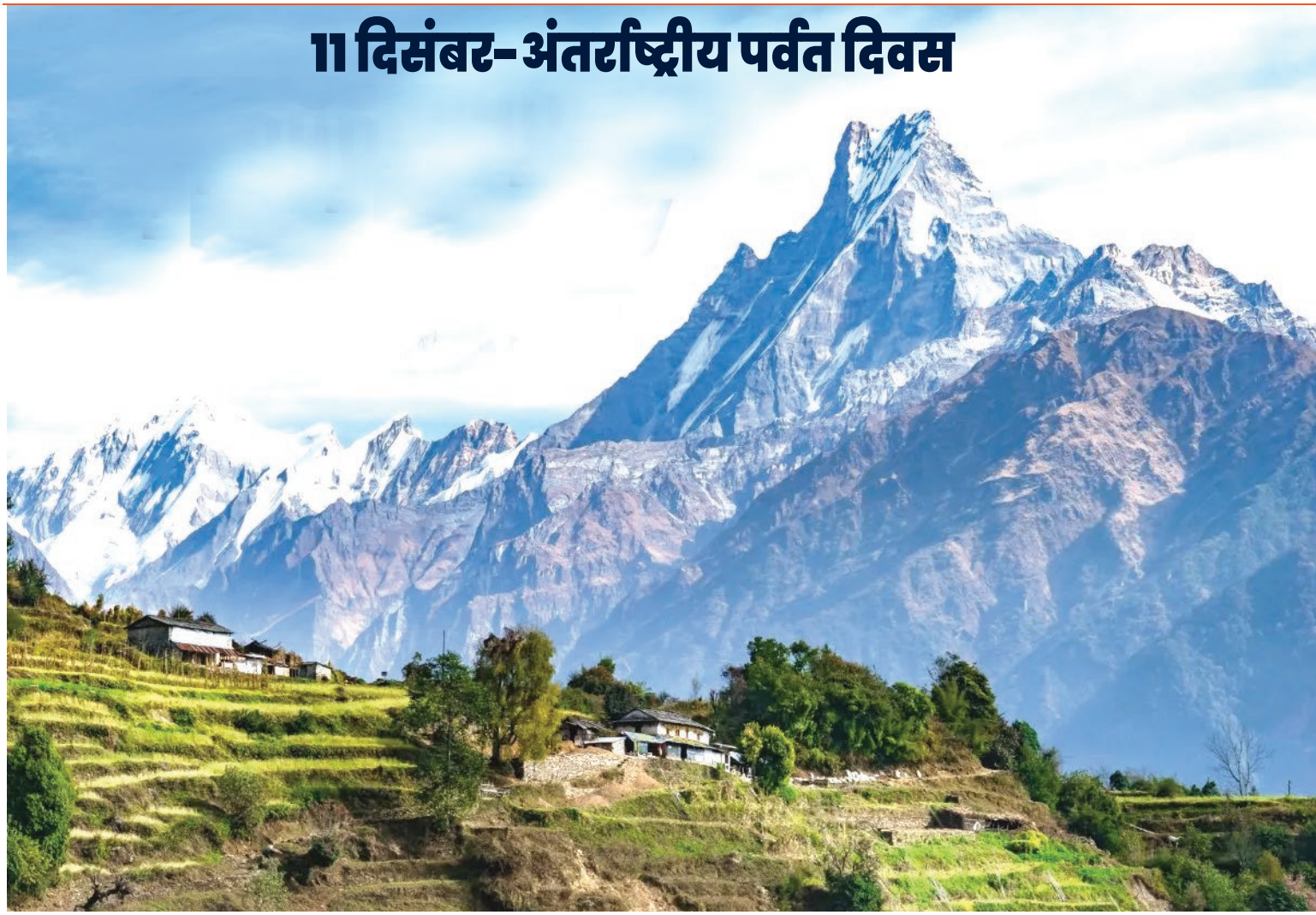



# जरूरी है कि पहाड़ बचे रहें

▪ युगांतर प्रकृति नेटवर्क

11 दिसंबर को प्रतिवर्ष अंतर्राष्ट्रीय पर्वत दिवस मनाया जाता है। इस दिवस की स्थापना संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 2002 में की गई थी और इसे पहली बार 2003 में मनाया गया। इस दिवस का मुख्य उद्देश्य दुनिया भर के लोगों के जीवन और ग्रह के लिए पर्वतीय क्षेत्रों के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाना है। आप भी इस तथ्य से सहमत होंगे कि पहाड़ महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे पृथ्वी की सतह का लगभग एक-चौथाई हिस्सा कवर करते हैं, वे दुनिया की 15% आबादी का घर हैं, वे दुनिया की लगभग आधी जैव विविधता के आकर्षण के केंद्र हैं, वे 70% ताजे पानी के स्रोत हैं, जो पीने, धोने और सिंचाई के लिए आवश्यक है, और अक्सर "वॉटर टावरों" के रूप में जाने जाते हैं और वे लाखों लोगों को भोजन, स्वच्छ ऊर्जा और आजीविका के अवसर प्रदान करते हैं।

यह दिन पर्वतीय पारिस्थितिक तंत्रों के संरक्षण की आवश्यकता पर भी जोर देता है, क्योंकि जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, और अति-पर्यटन जैसे आधुनिकीकरण के प्रभावों से पहाड़ खतरे में हैं। यह सतत पर्वतीय विकास और स्थानीय समुदायों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए वैश्विक और स्थानीय स्तर पर कार्रवाई करने का आह्वान करता है। खाद्य और कृषि संगठन इस दिवस के वार्षिक उत्सव का समन्वय करता है और हर साल एक विशिष्ट विषय तय किया जाता है, जिस पर दुनिया भर में कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

## भारत में पर्वतों की स्थिति

भौगोलिक, पारिस्थितिक और सांस्कृतिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत का एक बड़ा हिस्सा पर्वतीय क्षेत्रों से घिरा हुआ है, जिनका देश के पर्यावरण, अर्थव्यवस्था और जलवायु पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

## भौगोलिक स्थिति और विविधता

भारत में कई प्रमुख पर्वत श्रृंखलाएँ हैं, जिनमें सबसे महत्वपूर्ण हैं हिमालय। यह विश्व की सबसे ऊँची और युवा पर्वत श्रृंखला है, जो भारत के उत्तरी और उत्तर-पूर्वी हिस्सों को कवर करती है। यह भारत की जलवायु को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है (जैसे मॉनसून को रोकना और ठंडी उत्तरी हवाओं को रोकना)।

पश्चिमी घाटः यह भारत के पश्चिमी तट के समानांतर चलती है और जैव विविधता का एक महत्वपूर्ण हॉटस्पॉट है। पूर्वी घाट पूर्वी तट के समानांतर है। अरावली, विंध्य, सतपुड़ा, और नीलगिरि जैसी अन्य महत्वपूर्ण पर्वत श्रृंखलाएँ भी हैं। हिमालय से निकलने वाली प्रमुख नदियाँ (गंगा, ब्रह्मपुत्र, सिंधु) भारत की जल सुरक्षा और सिंचाई का मुख्य स्रोत हैं। भारतीय पर्वत श्रृंखलाएँ, विशेषकर हिमालय और पश्चिमी घाट, वनस्पतियों और जीवों की अद्वितीय और लुप्तप्राय प्रजातियों का घर हैं।

## चुनौतियां

- ग्लोबल वार्मिंग के कारण हिमालयी ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं, जिससे नदियों के जल स्तर और पैटर्न पर दीर्घकालिक प्रभाव पड़ रहा है।
- अनियंत्रित निर्माण, वनों की कटाई और भारी बारिश के कारण उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश जैसे राज्यों में भूस्खलन और बाढ़ की घटनाओं में वृद्धि हुई है।
- पर्यटन और शहरीकरण के कारण नाजुक पहाड़ी पारिस्थितिकी तंत्र पर दबाव बढ़ रहा है, जिससे स्थिरता प्रभावित हो रही है।

**भारत में कई प्रमुख पर्वत श्रृंखलाएँ हैं, जिनमें सबसे महत्वपूर्ण हैं हिमालय। यह विश्व की सबसे ऊँची और युवा पर्वत श्रृंखला है, जो भारत के उत्तरी और उत्तर-पूर्वी हिस्सों को कवर करती है। यह भारत की जलवायु को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है (जैसे मॉनसून को रोकना और ठंडी उत्तरी हवाओं को रोकना)।**

## संरक्षण के प्रयास

भारत सरकार और विभिन्न संगठन पर्वतीय क्षेत्रों के संरक्षण के लिए कई प्रयास कर रहे हैं। जैसे पर्यावरण प्रभाव आकलन और अन्य नियमों को लागू किया जा रहा है। पर्यावरण के अनुकूल पर्यटन को बढ़ावा देने की कोशिश की जा रही है। जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्य योजना के तहत हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने के लिए विशिष्ट मिशन चल रहे हैं। भारत में पर्वत केवल भौगोलिक विशेषताएँ नहीं हैं, बल्कि देश की जीवन रेखा हैं, जिन्हें वर्तमान में विकास और संरक्षण के बीच संतुलन बनाने की गंभीर आवश्यकता है।

## झारखंड के पहाड़ों की स्थिति

झारखंड के पहाड़ भौगोलिक रूप से महत्वपूर्ण हैं, लेकिन वे वर्तमान में कई पर्यावरणीय चुनौतियों और विकास बनाम संरक्षण के मुद्दों का सामना कर रहे हैं।

**छोटानागपुर पठार का हिस्साः** झारखंड का अधिकांश हिस्सा छोटानागपुर पठार पर स्थित है, जिसमें कई पहाड़ियाँ और उच्चभूमियाँ शामिल हैं।

प्रमुख पहाड़ियाँः यहाँ राजमहल पहाड़ियाँ, पारसनाथ पहाड़ियाँ (जो सबसे ऊँची चोटी है, सम्मेद शिखर के रूप में जैनियों का पवित्र स्थल), टैगोर हिल, त्रिकुट पहाड़ियाँ और सारंडा के घने जंगल (एशिया का सबसे बड़ा साल वन) जैसे महत्वपूर्ण पर्वतीय क्षेत्र हैं।

प्राकृतिक संसाधनः ये पहाड़ियाँ खनिज संसाधनों (कोयला, लौह अयस्क) और समृद्ध जैव विविधता का भंडार हैं, साथ ही कई नदियों (दामोदर, सुवर्णरेखा) के जल स्रोत भी हैं।

## वर्तमान स्थिति और चुनौतियाँ

**झारखंड के पहाड़ मुख्य रूप से निम्नलिखित समस्याओं का सामना कर रहे हैं:**

**खनन का प्रभावः** झारखंड खनिज-समृद्ध राज्य है और दशकों से चल रहे व्यापक खनन कार्यों ने कई पहाड़ी क्षेत्रों को बुरी तरह प्रभावित किया है। खनन के कारण वनों की कटाई हुई है, जिससे बड़े पैमाने पर निवास स्थान का नुकसान हुआ है और पारिस्थितिकी तंत्र बाधित हुआ है।

**अवैध कटाई और अतिक्रमणः** कई इलाकों में माफियाओं द्वारा पहाड़ों से पेड़ों की अंधाधुंध कटाई की जा रही है, जिससे कुछ पहाड़ पेड़-विहीन हो गए हैं।

**भूस्खलनः** हजारीबाग जैसे कुछ क्षेत्रों में, पुराने खनन कार्यों और मानसूनी बारिश के कारण भूस्खलन की घटनाएँ हुई हैं, जिससे स्थानीय निवासियों में डर का माहौल है।

**जल संकटः** पहाड़ी क्षेत्रों के कई आदिवासी गाँवों में स्वच्छ पानी की कमी है, जिससे निवासियों को स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

**मानव-वन्यजीव संघर्षः** वनों के विनाश और आवासों के विखंडन ने हाथियों और अन्य वन्यजीवों के लिए समस्याएँ पैदा की हैं।

## संरक्षण और भविष्य

**सरकारी प्रयासः** राज्य सरकार वन संरक्षण और वनीकरण के लिए पहल कर रही है और टिकाऊ खनन प्रथाओं को बढ़ावा देने के प्रयास किए जा रहे हैं।

**पर्यटन की संभावनाएँः** झारखंड के पहाड़ हरे-भरे जंगलों और झरनों के साथ अछूती प्रकृति से जुड़ने का अवसर प्रदान करते हैं, लेकिन यहाँ स्थायी पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए बेहतर बुनियादी ढाँचे और सामुदायिक भागीदारी की आवश्यकता है। कुल मिलाकर, झारखंड के पहाड़ पर्यावरणीय दबाव में हैं, लेकिन उनका पारिस्थितिक और सांस्कृतिक महत्व बहुत अधिक है, और उनके संरक्षण के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। ■

# दुनिया में हर साल 1 करोड़ हेक्टेयर वन क्षेत्र की होती है कटाई

**वनों की कटाई की दर 1990–2000 के दौरान 17.6 मिलियन हेक्टेयर प्रति वर्ष से घटकर 2015–2025 में 10.9 मिलियन हेक्टेयर प्रति वर्ष हो गई है। हालांकि, इसी अवधि में वनों के विस्तार की दर भी घटी है। 2000 से 2015 के दौरान यह 9.88 मिलियन हेक्टेयर प्रति वर्ष थी, जो 2015 से 2025 में घटकर 6.78 मिलियन हेक्टेयर प्रति वर्ष रह गई।**

**■ युगांतर प्रकृति नेटवर्क**

संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) की ग्लोबल फॉरेस्ट रिसोर्सेज असेसमेंट 2025 (एफआरए 2025) रिपोर्ट में कहा गया है कि पिछले एक दशक में दुनिया के सभी क्षेत्रों में वनों की कटाई की रफ्तार धीमी हुई है। यह रिपोर्ट हर पाँच वर्ष में जारी की जाती है। इसका 2025 का संस्करण 21 अक्टूबर 2025 को इंडोनेशिया के बाली में आयोजित ग्लोबल फॉरेस्ट ऑब्ज़र्वेशंस इनिशिएटिव प्लेनरी के दौरान प्रकाशित किया गया। ताजा आंकड़ों के मुताबिक, वर्तमान में पृथ्वी की कुल भूमि का लगभग एक-तिहाई हिस्सा यानी करीब 4.14 अरब हेक्टेयर में जंगल हैं। एफआरए 2025 रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि जंगलों के संबंध में कुछ और सकारात्मक परिवर्तन हुए हैं। जैसे अब आधे से अधिक वनों के लिए दीर्घकालिक प्रबंधन योजनाएं लागू हैं और लगभग पांचवें हिस्से के वन अब कानूनी रूप से स्थापित संरक्षित क्षेत्रों में आते हैं।

रिपोर्ट में यह भी चेतावनी दी गई है कि विश्वभर का वन पारिस्थितिकी तंत्र अभी भी गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। वर्तमान में वनों की कटाई की दर 10.9 मिलियन (1.09 करोड़) हेक्टेयर प्रति वर्ष है, जो अब भी चिंताजनक रूप से अधिक है। खाद्य सुरक्षा, स्थानीय आजीविका और नवीकरणीय जैविक पदार्थों तथा ऊर्जा के स्रोत के रूप में जंगल अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। यहां विश्व की जैव विविधता का एक बड़ा हिस्सा रहता हैं। जंगल वैश्विक कार्बन और जल चक्र को नियंत्रित करने में मदद करते हैं।

एफएओ के महानिदेशक क्यू डोंगयू ने एफआरए 2025 की भूमिका में लिखा है: एफआरए पूरी दुनिया के वनों की स्थिति, उनके संसाधनों, प्रबंधन और उपयोग का सबसे बड़ा और भरोसेमंद आकलन है। यह रिपोर्ट बताती है कि दुनिया में कितने वन हैं, उनकी हालत कैसी है, उनका इस्तेमाल कैसे हो रहा है और उन्हें कैसे संभाला जा रहा है। साधारण शब्दों में कहें तो यह रिपोर्ट वनों से जुड़ी हर जरूरी जानकारी एक जगह इकट्ठी करती है, ताकि सरकारें और समाज बेहतर फैसले ले सकें और वनों का टिकाऊ (सतत) तरीके से संरक्षण कर सकें।

**निष्कर्ष क्या रहे:-**

1. दुनिया में कुल 4.14 अरब हेक्टेयर भूमि वन क्षेत्र के अंतर्गत आती है, जो पृथ्वी के कुल भूभाग का 32 प्रतिशत है। यह प्रति व्यक्ति औसतन 0.5 हेक्टेयर वन क्षेत्र के बराबर है। विश्व के लगभग आधे वन उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में स्थित हैं।

2. वन क्षेत्र की वार्षिक शुद्ध हानि 1990 के दशक में 10.7 मिलियन हेक्टेयर प्रति वर्ष थी, जो 2015–2025 की अवधि में घटकर 4.12 मिलियन हेक्टेयर प्रति वर्ष रह गई है।
3. वनों की कटाई की दर 1990–2000 के दौरान 17.6 मिलियन हेक्टेयर प्रति वर्ष से घटकर 2015–2025 में 10.9 मिलियन हेक्टेयर प्रति वर्ष हो गई है। हालांकि, इसी अवधि में वनों के विस्तार की दर भी घटी है। 2000 से 2015 के दौरान यह 9.88 मिलियन हेक्टेयर प्रति वर्ष थी, जो 2015 से 2025 में घटकर 6.78 मिलियन हेक्टेयर प्रति वर्ष रह गई।
4. ये कुल वन क्षेत्र के 92 प्रतिशत (3.83 अरब हेक्टेयर) हिस्से का प्रतिनिधित्व करते हैं। 1990 से 2025 के बीच ऐसे वनों में 324 मिलियन हेक्टेयर की कमी आई है, लेकिन शुद्ध हानि की दर अब काफी धीमी हो गई है।

पिछले दशक में प्राकृतिक रूप से पुनर्जीवित वनों में सबसे अधिक गिरावट अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका में दर्ज की गई है, जबकि यूरोप में ऐसे वनों में वृद्धि हुई है।

5. प्राथमिक या मूल वनों का क्षेत्रफल कम से कम 1.18 अरब हेक्टेयर है— यह दुनिया के कुल रिपोर्ट किए गए वन क्षेत्र का लगभग एक-तिहाई हिस्सा है। हालाँकि इन वनों का नुकसान जारी है, लेकिन 2000 के शुरुआती वर्षों की तुलना में इसकी दर अब आधी रह गई है।
6. रोपित या कृत्रिम रूप से उगाए गए वन कुल वन क्षेत्र के लगभग 8 प्रतिशत हिस्से का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिनका कुल क्षेत्रफल अनुमानतः 312 मिलियन हेक्टेयर है।1990 के बाद से इन वनों का विस्तार सभी क्षेत्रों में हुआ है, लेकिन पिछले दशक में इसकी वृद्धि की गति धीमी पड़ी है।
7. विश्व के वनों में मौजूद कुल वृद्धि योग्य लकड़ी का अनुमान लगभग 630 अरब घन मीटर लगाया गया है। वनों में कार्बन भंडार में भी वृद्धि हुई है, जो अब 714 गीगाटन तक पहुंच गया है।
8. विश्व के लगभग 20 प्रतिशत वन (813 मिलियन हेक्टेयर) अब कानूनी रूप से स्थापित संरक्षित क्षेत्रों में आते हैं। 1990 से अब तक यह क्षेत्र 251 मिलियन हेक्टेयर बढ़ा है।
9. दुनिया भर के आधे से अधिक वन, लगभग 2.13 अरब हेक्टेयर (कुल वन क्षेत्र का 55 प्रतिशत) अब प्रबंधन योजनाओं के अंतर्गत आते हैं। 1990 के बाद से यह क्षेत्र 365 मिलियन हेक्टेयर बढ़ा है।
10. हर साल औसतन 261 मिलियन हेक्टेयर भूमि आग से प्रभावित होती है, जिनमें से लगभग आधा हिस्सा वन क्षेत्र होता है। साल 2020 में कीट, बीमारियाँ और चरम मौसमी घटनाओं के कारण लगभग 41 मिलियन हेक्टेयर वनों को नुकसान पहुंचा, जो मुख्यतः समशीतोष्ण और उपध्रुवीय क्षेत्रों में स्थित हैं।
11. विश्व के 71 प्रतिशत वन सार्वजनिक (सरकारी) स्वामित्व में हैं, जबकि 24 प्रतिशत निजी स्वामित्व में आते हैं। शेष वन क्षेत्र या तो अन्य श्रेणियों में है या स्वामित्व की स्थिति अज्ञात है।
12. लगभग 1.20 अरब हेक्टेयर (कुल वनों का 29 प्रतिशत) क्षेत्र मुख्यतः उत्पादन के लिए प्रबंधित किया जाता है, जबकि 616 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र बहुउद्देशीय उपयोग के लिए प्रबंधित है। ■

# जहरीली हवा से सांसों पर संकट

मैं तुम्हारी पहली साँस हूँ... मुझे आखिरी मत बनने दो। हवा अगर बोल पाती, तो शायद सबसे पहले यही कहती, "मैं तुम्हारी जन्मदात्री हूँ...तुम्हारी पहली रोती हुई साँस मेरी गोद में ही तो आई थी...आज मैं तुम्हारी आँखों में धुआँ बनकर क्यों उतर रही हूँ?" कभी वह साफ, हल्की, सुकोमल थी—मानो प्रकृति का स्वर्णिम गहना, जो हर सुबह धरती के माथे पर लग जाता था। आज वह टूटी हुई, दबी हुई, फीकी साँसों जैसा दर्द लेकर हमारे बीच खड़ी है—जैसे कोई माँ अपने ही बच्चों के हाथों हर दिन घायल हो रही हो। दिल्ली की हवा सबसे ज़्यादा सिसक रही है। लेकिन यह सिसकी केवल दिल्ली की नहीं—यह मुंबई के समुद्री किनारों तक पहुँची है, कोलकाता की नदियों तक चली गई है, चेन्नई की गर्म हवाओं में घुल गई है। लखनऊ, पटना, कानपुर, इंदौर जैसे शहर अब उसी अँधेरी सुरंग में खड़े हैं।

■ आशुतोष मिश्रा

दिसंबर की तकलीफदायक सुबह और दम घुटने वाली हवा ठंड का मौसम आते ही हवा कराहने लगती है। धुआँ, धूल, पराली, कचरा—चारों तरफ से उसके शरीर पर ज़हर मल दिया जाता है। शहर की सड़कों पर चलते हर व्यक्ति की आँखें चुभती हैं, फेफड़े भारी लगते हैं, और मास्क शहर का नया चेहरा बन जाता है। हवा—जो कभी धरती की सबसे पवित्र दूत हुआ करती थी—अपने साथ पहाड़ों की ताजगी, पेड़ों की सुगंध और सुबह की शांति लाती थी—आज उसी हवा के चेहरे पर धुएँ की परत जम गई है। एक ऐसी संरक्षिका, जिसने सदियों तक अपने आँचल में हमारी साँसों को पाला,उसकी हथेलियों पर राख है, उसके बालों में धूल है,और उसके स्वर में घुटन की काँपती सी लय है। दिल्ली इसका सबसे बड़ा उदाहरण है जहाँ कभी सर्दियों की धुंध रोमांच का एहसास कराती थी, अब वही धुंध डर बनकर लोगों के फेफड़ों पर बैठ जाती है। स्थिति इतनी भयावह है कि शहर की हर साँस मानो पूछ रही हो—क्या मैं ज़हर हूँ या जीवन? यह समस्या केवल दिल्ली तक सीमित नहीं—चारों महानगर और अनगिनत सेकंड-टियर व थर्ड-टियर शहर धीरे-धीरे उसी अंधेरी खाई की ओर बढ़ रहे हैं, जहाँ हवा, जीवन का सहारा, खुद जीवन के खिलाफ जा खड़ी हुई है।

## हर सांस को ज़हर बनाने वाले—उद्योग, वाहन, धूल और हमारी आदतें

हवा के शरीर पर ज़हर के घाव कई जगह से पड़े हैं। वह चुप नहीं रहती—अगर सुनें तो वह हमें बताती है कि किसने उसके फेफड़ों में ज़हर भरा।

**उद्योग :** आग उगलती चिमनियाँ और हवा की छाती पर धुएँ की चोट कारखानों से उठती चिमनियाँ, हवा के कानों में गरजती हैं—प्रगति का मूल्य चुकाना ही होगा पर हवा काँपते स्वर में जवाब देती है—मेरे प्राण ले कर किसका विकास? उद्योगों से निकलने वाला धुआँ, धातुओं का महीन चूर्ण, रासायनिक गैसें, सब मिलकर हवा के फेफड़ों को हर पल कमजोर करते रहते हैं। भारत के कई औद्योगिक नगर ऐसे लगते हैं मानो विकास ने वहाँ अपनी चमकदार परछाईं के पीछे धुएँ की गाढ़ी छाया छोड़ दी हो। चिमनियाँ ऊपर से सिर्फ धुआँ उगलती नहीं दिखतीं—वे हवा के शरीर पर वही असर करती हैं, जैसे किसी उजले वस्त्र पर कड़वे काजल की मोटी रेखा। सल्फर, अमोनिया, कार्बन—ये सब हवा की नसों में ऐसे घुलते हैं जैसे कोई अदृश्य धीमा ज़हर जो धीरे-धीरे जीवन की नर्मी को कठोर बनाता जाता है।

**वाहन:** धुएँ की अनगिनत साँसें हवा पर लाद दी जाती हैं। सड़कों पर दौड़ते वाहन हवा की गर्दन पर धुएँ का भारी पट्टा कस देते हैं। वह चलना चाहती है लेकिन जकड़ जाती है। हर दिन करोड़ों वाहनों का धुआँ हवा को इतना जहरीला कर देता है कि वह खुद अपने अस्तित्व से डरने लगती है। शहरों की सड़कें रात में रोशनी से जगमगाती हैं, लेकिन उन्हीं सड़कों पर दिनभर दौड़ते वाहनों का धुआँ हवा की साँसों के दीपक को बुझाता है। वाहनों की रफ्तार जितनी तेज़, हवा का स्वास्थ्य उतना ही मंद। यह एक विरोधाभास है—हमारी प्रगति सरपट दौड़ती है, पर हमारी हवा उसी रफ्तार में गिरती जाती है। जब लाखों वाहन एक साथ धुआँ छोड़ते हैं, हवा ऐसा महसूस करती है मानो उसके गले को किसी ने धीरे-धीरे दबाना शुरू कर दिया हो। वह घुटी आवाज़ में कहती है— "मेरी साँसें भारी हो रही हैं, तुम्हारे कारण तुम्हारे ही लिए।"

**निर्माण धूल :** हवा की आँखों में उछाली जाने वाली धूल निर्माण स्थलों पर उड़ती धूल हवा की आँख में गए रेत की तरह उसकी दृष्टि धुंधली कर देती है। वह हमें पुकारती है—"मेरी पलकों पर यह भारी परत कौन रख रहा है?" लेकिन शहरों की रफ्तार उसकी पीड़ा को सुनने का समय नहीं निकालती। यह धूल हवा में जैसी फैलती है, वैसी ही किसी युद्ध के बाद मलबे पर उठती दिखाई देती है। हवा इस धूल को ओढ़कर अपनी पारदर्शिता खो देती है। उसकी आँखें धुँधली, उसका चेहरा फीका और उसका भार बढ़ जाता है मानो किसी थके हुए यात्री के कंधों पर अनचाहा बोझ रख दिया गया हो। नए शहरों का सपना हवा की आँखों में मिट्टी बनकर उतरता है। धूल उसकी पलकें काटती है, उसकी दृष्टि धुंधला देती है। वह दुख से कहती है—"मुझे तुम्हारा विकास मंज़ूर है, लेकिन मेरी आँखों में दर्द क्यों?"

**पराली :** खेतों की आग, शहरों का धुआँ, पराली जलने से उठता धुआँ हवा की त्वचा पर जलन छोड़ता जाता है। हवा जैसे रोकर कहती है—"मैं खेतों की साथी थी, आज खेत ही मुझे जला रहे हैं।" सर्दियों में यह दर्द और भी बढ़ जाता है।पराली की लपटें गाँव में उठती हैं, लेकिन उनका धुआँ शहरों की साँसें चुराता है। यह एक अद्भुत विडंबना है— खेत पोषण देते हैं, पर उनका धुआँ दम घोंटता है। यह वही आग है, जो हवा की त्वचा पर फफोले छोड़ती है और मीलों दूर बैठे लोगों को फेफड़ों के दर्द का कारण बनती है। खंड-खंड खेतों में उठती लपटें हवा के शरीर पर छाले छोड़ देती हैं। हवा चिल्लाती है—"मैं खेतों की साथी थीआज वही खेत मुझे जला रहे हैं"

**कचरा-दहन :** हवा पर पिघला हुआ प्लास्टिक कचरा जलाने से उठने वाला काला धुआँ हवा के चेहरे को पल भर में काला और दुखी कर देता है। हवा अपने चेहरे को छुपाते हुए हमसे कहती है—"मैं इतनी बदसूरत नहीं थी, यह तुमने मुझे बनाया है।"कचरा जलाने से उठने वाला धुआँ हवा पर पिघले प्लास्टिक की तरह चिपक जाता है। यह धुआँ हवा के शरीर पर एक स्थायी घाव बन जाता है,जो वर्षों तक भरा नहीं जा सकता।

## सरकारी गाइडलाइन : मजबूत कानून, कमजोर क्रियान्वयन

नीतियाँ कागज़ पर सुंदर दिखती हैं—जैसे किसी बीमारी के लिए लिखा गया एक विस्तृत उपचार-पत्र। लेकिन बीमारी पुरानी है, उपचार देर से शुरू होता है। सरकार हवा को बचाने के लिए कई गाइडलाइन बनाती है— ग्रेडेड एक्शन प्लान, धूल-नियंत्रण नियम, पुरानी गाड़ियों पर प्रतिबंध, कचरा जलाने पर दंड, औद्योगिक उत्सर्जन पर निगरानी। हवा इन गाइडलाइन को देखकर एक हल्की मुस्कान ला सकती थी—यदि उनका पालन सचमुच ईमानदारी से होता। लेकिन हवा की शिकायत यह है—"मेरे लिए नियम तो लिखे जाते हैं, पर मेरे लिए लागू नहीं किए जाते।" हर बार हवा घायल होती है, उसके बाद सरकार की मशीनरी धीमे कदमों से चलती है। यह देरी हवा के घाव और गहरे कर देती है। जीआरएपी हो या क्यू आई मॉनिटर, निर्माण नियंत्रण हो या पुराने वाहन—इन सबका प्रभाव तभी होगा, जब क्रियान्वयन कड़ाई से हो। आज हवा का हाल ऐसा है जैसे कोई रोगी जिसे दवा पूरी देरी से मिले—उपचार होता है, पर बीमारी गति से बढ़ती रहती है। सरकार के पास गाइडलाइन हैं, कानून हैं, नीतियाँ हैं। हवा इन्हें पढ़कर थोड़ी आशा का दीपक जलाती है—लेकिन फिर धीमी आवाज में पूछती है—नीतियाँ बहुत हैं मेरी पीड़ा को छूने वाला हाथ कहाँ हैं?

### एनजीओः हवा की सेवा में जुटे लोगों की भी सीमा है

एनजीओ हवा के लिए बहुत कुछ कर रहे हैं। वे उसके लिए दवा नहीं, पर राहत की ठंडी पट्टी बन जाते हैं।भारत में अनेक संगठन पर्यावरण सेवा का दावा करते हैं, पर इनके बीच अंतर आकाश–पाताल का है। कुछ संगठन हवा की पीड़ा को सच में समझते हैं, कुछ केवल "सीनियरिटी की तस्वीरें" बनाते हैं।

### केस स्टडी 1

**जन्मदिन का पौधाः** जब बच्चों ने हवा का बचाव अपने हाथ में लिया एक संगठन ने दिल्ली में, हर जन्मदिन पर एक पौधा अभियान शुरू किया। यह विचार सरल था पर प्रभाव गहरा। एक पौधा लगाना जैसे किसी घायल के माथे पर शीतल पट्टी रख देना। कई स्कूलों ने इसे अपनाया। बच्चे पौधों के साथ बढ़ने लगे—जैसे हवा और बचपन दोनों एक-दूसरे की रक्षा कर रहे हों।

### केस स्टडी 2

**कम्युनिटी-एयर निगरानीः** हवा की धड़कन को मापने का प्रयास मुंबई और बेंगलुरु में एक संस्था ने स्थानीय स्तर पर छोटे-छोटे एयर मॉनिटर लगाए। ये मॉनिटर हवा की धड़कन की तरह हर मिनट उसकी स्थिति बताते थे। लोगों ने पहली बार प्रदूषण को सिर्फ धुआँ नहीं, एक जीवित संकट की तरह देखना शुरू किया। यहीं से समुदाय में धूल कम करने, कचरा न जलाने और पेड़ लगाने की चेतना जन्मी। शहर के कई हिस्सों में एयर-क्वालिटी मॉनिटरिंग सिस्टम लगाती है। ये यंत्र हवा की धड़कन मापते हैं और बताते हैं कि वह कब कमजोर पड़ रही है। हवा को इससे सहारा मिलता है— कम से कम उसकी पीड़ा दर्ज तो होती है।

**आम आदमीः** आम आदमी हवा का उपभोक्ता है, प्रदूषण का निर्माता भी। यह वही विरोधाभास है, जो भारतीय शहरों की कहानी को और भी ज्यादा जटिल बना देता है। हवा की दृष्टि में ये सब वही हैं जैसे किसी संरक्षक के हाथों अनजाने में दिया गया घाव। हवा का सबसे गहरा घाव हमारे अपने व्यवहार से है। छोटी दूरी पर भी गाड़ी निकालना, कचरा जलाना, अनावश्यक पटाखे फोड़ना, पेड़ों की कटाई, धूल उड़ाने वाले कार्य, घरों में धुआँ हवा हमें देखकर कहती है—"तुम मेरे साथ यह सब क्यों कर रहे हो?" लेकिन फिर वही आम आदमी हवा का सबसे बड़ा सहारा भी बन सकता है—पैदल चलकर, साइकिल का उपयोग, सार्वजनिक परिवहन, पेड़ लगाकर, धूल रोककर, कचरा न जलाकर जब आम आदमी ऐसा करता है तो हवा उसकी ओर देखकर आँखों में चमक लाती है—हवा कहती है—"तुम बदलोमैं तुम्हारी दुनिया बदल दूँगी।"

**शास्त्रों में वायु-शुद्धि :** परंपरा का विज्ञान से मिलनः भारतीय शास्त्रों में हवा को "प्राण","आयु", "सृष्टि का आधार" माना गया है। पुराणों में लिखा है—वायु शुद्ध हो तो मन भी शुद्ध हो जाता है। उपाय बताए गए हैं—यज्ञ : वातावरण को शुद्ध करने का प्राचीन उपाय, प्राणायाम : शरीर और हवा दोनों की शुद्धि, पौधरोपण : हवा को नई शक्ति देने का मार्ग, जल-शुद्धि : वातावरण को संतुलित रखने का आधार शास्त्र हवा से अलग नहीं, हवा के साथ जीवन जीने की कला बताते हैं। हवा विनम्रता से याद दिलाती है—"मैं देवी नहीं कहती—बस इतना चाहती हूँ कि मुझे बोझ मत समझो।"

# प्रदूषण के प्रमुख कारक

दम घोंटती यातायात-धमनियाँ-धुएँ से लबालब भरे ये पहिए मेरी साँसों को भीतर ही भीतर जला डालते हैं। हर सड़क मेरे फेफड़ों पर एक नया बोझ लादकर आगे बढ़ती है। मेट्रो शहरों में प्रदूषण का लगभग 35–40% हिस्सा वाहनों से निकलने वाले धुएँ का होता है। इन इंजनों से निकला PM2.5 प्रतिदिन मेरी फेफड़ों की क्षमता को उसी अनुपात में घटा देता है, जितना एक पूरे पैकेट सिगरेट का धुआँ। औद्योगिक चिमनियों का दहकता कहरः इनकी जलती भट्ठियाँ मेरे फेफड़ों को तपते अंगारों में बदल देती हैं। धन की मशीनें चलती रहती हैं, पर मेरी साँसें बुझती जाती हैं। औद्योगिक क्षेत्रों से उठने वाली सल्फर डाइऑक्साइड और नाइट्रोजन ऑक्साइड का स्तर सामान्य मानक से कई गुना अधिक पाया गया है। इन रसायनों का संयुक्त प्रभाव कैंसर, अस्थमा और फेफड़ों की सूजन के मामलों में 25–28% बढ़ोतरी से जुड़ा पाया गया है।

**निर्माण-स्थलों की अंधी धूलः** उठते कण मेरी आँखों पर एक मोटा धूसर पर्दा चढ़ा देते हैं। इमारतें ऊँची होती जाती हैं, और मेरी दृष्टि उसी अनुपात में धुँधली। निर्माण स्थलों से उड़ने वाली धूल शहरी प्रदूषण का पाँचवाँ हिस्सा बन चुकी है। यह धूल आँखों में 35% तक एलर्जी और संक्रमण बढ़ाने के लिए जिम्मेदार मानी गई है।

**सुलगती खेत-धरा का धुआः** पराली की आग मेरी त्वचा पर झुलसन और फफोले उकेर जाती है। यह धुआँ जमीन से उठता है, पर असर मेरे पूरे अस्तित्व तक पहुँचता है। अक्टूबर–नवंबर में पराली जलने से दिल्ली–एनसीआर में AQI 300 से उछलकर

## आँकड़ों की भाषा में हवा का दर्द

| दिल्ली की हवा की तकलीफ (सर्दियों में): | AQI : 350–500 |
|---|---|
| दिन | अस्पतालों की O.P.D. भरी |
| स्कूल | कई बार बंद |
| लाखों बच्चे | खाँसी से परेशान |
| बुजुर्ग | सीढ़ियाँ चढ़ना तक मुश्किल |

*हवा यदि इंसान होती तो आईसीयू में भर्ती होती।*

## भारत के 15 सबसे प्रदूषित शहर

| दिल्ली | गाज़ियाबाद | नोएडा | फरीदाबाद |
| पटना | कानपुर | लखनऊ | वडोदरा |
| इंदौर | भिवाड़ी | आगरा | मेरठ |
| कोलकाता | मुंबई | लुधियाना |

*(AQI 250–450 तक औसतन सर्दियों में)*

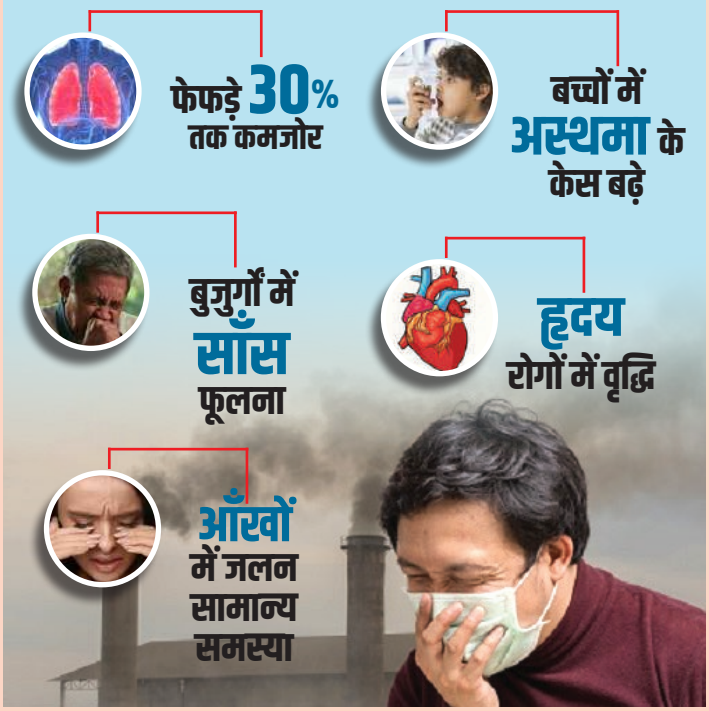

600+ तक पहुँच जाता है। यह मौसमी प्रदूषण त्वचा और श्वसन तंत्र पर ऐसा असर डालता है जैसा कि तीन महीने तक लगातार जले कूड़े का धुआँ।

**कूड़े की आग, काली होती मेरी पहचानः** सड़कों के किनारे जलते ढेर का धुआँ मेरे चेहरे पर कालिख जमा देता है। रात को जलती यह आग मेरे शहर की साँसें भी राख करती जाती है। भारत में रोज़ाना लगभग 55% कूड़ा गलत तरीके से निस्तारित होता है, जिसमें खुले में जलाने की प्रवृत्ति सबसे घातक है। इस प्रक्रिया में उत्पन्न डाइऑक्सिन, WHO की सूची के अनुसार, मानव शरीर के लिए अत्यंत कार्सिनोजेनिक (कैंसरकारी) माने जाते हैं।

**बंद दीवारों में उठता जहरः** घरेलू धुआँ चुपचाप मेरे भीतर घुटन का कसता हुआ चक्र बनाता है। घर का खाना पच जाता है, पर यह धुआँ शरीर को धीमे-धीमे खा जाता है। बायोमास से जलने वाले चूल्हों का धुआँ घर के अंदर PM2.5 की मात्रा को WHO मानक से 15–20 गुना अधिक कर देता है। इसी धुएँ से हर वर्ष देश में लगभग 6 लाख से अधिक महिलाओं और बच्चों की समयपूर्व मृत्यु दर्ज की जाती है।

### समाधान

हवा हमारे सामने खड़ी होकर हमसे बस इतना कहती है—"थोड़ा संभल जाओ, मैं संभल जाऊँगी।" हम कर सकते हैं—पैदल और साइकिल की आदत अनावश्यक वाहन उपयोग से बचना, कचरा न जलाना, 1 व्यक्ति 1 पेड़ का संकल्प, घरों में धुएँ को कम करना, निर्माण स्थलों पर पानी का छिड़काव, पराली के लिए जैविक विकल्प, औद्योगिक निगरानी, सरकार की गाइडलाइन का पालन, हवा को बचाना, जीवन के भविष्य को बचाना है। हवा कोई वस्तु नहीं, एक जीव है—जो हमारे साथ जन्म लेती है और हमारे साथ जीती है। आज वह कमजोर है, लेकिन मरी नहीं है। उसकी डोर टूट रही है, लेकिन पूरी तरह टूटी नहीं। हम चाहें तो इस डोर को मजबूत कर सकते हैं। हम न चाहें तो यह डोर हमेशा के लिए टूट सकती है। राष्ट्रीय प्रदूषण नियंत्रण दिवस हमसे यही कह रहा है—"हवा को बचाइये क्योंकि हवा ही जीवन की असल डोर है।" ■

# शहरी नियोजन से बढ़ी दिक्कतें!

■ युगांतर प्रकृति नेटवर्क

**चंडीगढ़ को 1950 के दशक में मशहूर वास्तुकार चार्ल्स-एडौर्ड जेनरैट, जिन्हें ले कॉर्बुसीयर के नाम से जाना जाता है, ने डिजाइन किया था। ले कॉर्बुसीयर ने एक खास "ग्रिडिरॉन" सिस्टम (चौड़ी और सीधी सड़कों के जाल) के साथ डिजाइन किया था। इस योजना का मकसद था कि पैदल चलने वाले सुरक्षित रहें, गाड़ियां आसानी से चलें, और शहर में ट्रैफिक जाम या प्रदूषण न हो।**

दशकों में बढ़ती भीड़ लोगों के आवागमन और उनके जीवन को कितनी बुरी तरह से प्रभावित कर सकती है, अहमदाबाद इसका सटीक उदाहरण है। 2010 में अहमदाबाद में साबरमती नदी के किनारे को सुंदर बनाने की एक बड़ी परियोजना शुरू हुई थी। इसमें वादा किया गया था कि विस्थापित किए गए लोगों को नए, अच्छे घर और बेहतर सुविधाएं मिलेंगी। लेकिन ओधव जैसे इलाकों जहां बड़ी संख्या में विस्थापित लोगों को बसाया गया था, वहां सार्वजनिक परिवहन का कोई इंतजाम नहीं किया गया जिससे ये लोग शहर से कट गए और जीवित रहने के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

केंद्र शासित प्रदेश चंडीगढ़ इस बात का एक और उदाहरण है कि कैसे भारत के शहरों में सार्वजनिक परिवहन की कमी के कारण लोग अपनी निजी गाड़ियों का ज्यादा इस्तेमाल कर रहे हैं। बीस साल पहले चंडीगढ़ की चौड़ी सड़कें और कम ट्रैफिक देखकर लोग सोचते थे कि क्या शहर जरूरत से ज्यादा बड़ा बना दिया गया है। लेकिन, 2025 तक हालात पूरी तरह से बदल चुके हैं। चंडीगढ़ में अब रजिस्टर गाड़ियों की संख्या वहां की आबादी से भी ज्यादा हो गई हैं। इसका मतलब है कि यह भारत का ऐसा शहर बन गया है, जहां प्रति व्यक्ति सबसे ज्यादा गाड़ियां हैं। चंडीगढ़ में सड़क सुरक्षा पर 2023 की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार, इस केंद्र शासित प्रदेश की आबादी 12.5 लाख थी, लेकिन गाड़ियों की संख्या 13.2 लाख थी। इतनी ज्यादा गाड़ियों के कारण शहर की अच्छी तरह से बनी चौड़ी और सीधी सड़कों की व्यवस्था पर बहुत ज्यादा दबाव बढ़ गया है। लोग बताते हैं कि अब कहीं भी आने-जाने में बहुत ज्यादा समय लगता है।

चंडीगढ़ निवासी गुरनाज कौर बोपरई बताती हैं कि कुछ साल पहले 3 किलोमीटर की दूरी तय करने में 5-6 मिनट लगते थे, लेकिन अब इसमें 15-20 मिनट लगते हैं। रोज गाड़ी चलाकर काम पर जाने वाली 39 वर्षीय गुरनाज इसके लिए ट्रैफिक सिग्नल पर लंबा इंतजार (120 सेकंड तक) और धीमी गति सीमा को इसका कारण मानती हैं। सड़क सुरक्षा कार्यकर्ता हरमन सिद्धू ने कहा, "यह शर्म की बात है कि चंडीगढ़ जैसे एक सुव्यवस्थित शहर

में सिर्फ तीन किलोमीटर की दूरी तय करने में 20 मिनट लगते हैं।" स्थानीय कैब ड्राइवर तरनजीत सिंह ने कहा, "पहले उनका 15 लीटर पेट्रोल 15 दिन चलता था, लेकिन अब ट्रैफिक और लंबे इंतजार के कारण उन्हें हर 10 दिन में पेट्रोल भरवाना पड़ता है।" चंडीगढ़ प्रशासन के आंकड़ों के अनुसार, दोपहिया वाहन चलाने वाले हर महीने 20-45 लीटर पेट्रोल खर्च करते हैं। जबकि, कार चलाने वाले हर महीने लगभग 200 लीटर पेट्रोल इस्तेमाल करते हैं।

कोविड-19 महामारी के दौरान (2019 से 2020 तक) गाड़ियों के रजिस्ट्रेशन में कमी आई थी। 2019 में नए पंजीकृत वाहन 42,616 से घटकर 2020 में 29,518 रह गए थे। लेकिन, उसके बाद से इनकी संख्या में तेज उछाल देखा गया है। 2022में, वाहन पंजीकरण में बढ़ोतरी का ट्रेंड जारी रहा। 2021 में 36,867 की तुलना में 16,129 अधिक वाहन पंजीकृत हुए।

चंडीगढ़ को 1950 के दशक में मशहूर वास्तुकार चार्ल्स-एडौर्ड जेनरैट, जिन्हें ले कॉर्बुसीयर के नाम से जाना जाता है, ने डिजाइन किया था। ले कॉर्बुसीयर ने एक खास "ग्रिडिरॉन" सिस्टम (चौड़ी और सीधी सड़कों के जाल) के साथ डिजाइन किया था। इस योजना का मकसद था कि पैदल चलने वाले सुरक्षित रहें, गाड़ियां आसानी से चलें, और शहर में ट्रैफिक जाम या प्रदूषण न हो। लेकिन शहर के अनियंत्रित विकास ने इस मूल योजना को नुकसान पहुंचाया है। भले ही शहर की ज्यादातर पुरानी सड़कें अभी भी वैसी ही हैं, लेकिन निजी कारों की संख्या इतनी बढ़ गई है कि अब वहां भी ट्रैफिक जाम, प्रदूषण जैसी समस्याएं पैदा हो गई हैं, जिन्हें इस शहर को बनाते समय रोकने की कोशिश की गई थी। आज पैदल चलने वाले और साइकिल चलाने वाले सबसे ज्यादा असुरक्षित हैं। वे अब शहर में सुरक्षित रूप से आवाजाही नहीं कर सकते हैं।

चंडीगढ़ की बस सेवा अब लोगों के लिए उतनी उपयोगी नहीं रह गई है, वह अपनी अहमियत बनाए रखने के लिए संघर्ष कर रही है। चंडीगढ़ परिवहन उपक्रम के आंकड़ों के अनुसार, 2016-17 से 2018-19 के बीच, बसों की संख्या (बेड़ा) और यात्रियों की संख्या दोनों में कमी आई। 2016-17 में बसों का बेड़ा 565 था, जो 2018-19 में घटकर 534 रह गया, जबकि इसी अवधि में यात्रियों की संख्या 5,69,000 से घटकर 5,54,000 रह गई। हालांकि, 2022-23 में बसों की संख्या तो बढ़कर 635 हो गई, लेकिन यात्रियों की संख्या और ज्यादा घट गई। 2021-22 में 2.19 लाख यात्री थे, जो 2022-23 में घटकर सिर्फ 1.31 लाख रह गए। परिवहन विभाग के अधिकारियों ने कहा कि निजी वाहनों की बढ़ती संख्या और बसों में लगने वाला ज्यादा यात्रा समय की वजह से अब वे लोगों की पसंद नहीं रहीं।

शहर के बीचों-बीच सेक्टर 17 में स्थित मुख्य बस टर्मिनल को अब शहर के बाहरी इलाके सेक्टर 43 में ले जाया गया है। इससे लोगों की मुश्किलें और बढ़ गई हैं। लोग शिकायत करते हैं कि बस से आने-जाने में बहुत ज्यादा समय लगता है और इससे उनकी परेशानियां बढ़ गई हैं, पहले तो बस पकड़ने के लिए उन्हें लंबी दूरी तक पैदल ही चलना पड़ता है, फिर थोड़ी दूरी की यात्रा के लिए भी बार-बार बसें बदलनी पड़ती हैं। स्थानीय निवासी प्रमोद शर्मा बताते हैं कि बस से 3-5 किलोमीटर की दूरी तय करने में कम से कम दो बसें बदलनी पड़ती हैं और 600 मीटर पैदल भी चलना पड़ता है। यही दूरी कार से आधे समय में तय हो जाती है। चंडीगढ़ को असल में इस तरह डिजाइन किया गया था कि पैदल चलने वालों और गाड़ियों के लिए अलग-अलग 7 तरह की सड़कें हों, ताकि वे सुरक्षित रहें और ट्रैफिक जाम न हो। लेकिन अब यह योजना काम नहीं कर रही है। फुटपाथों और साइकिल ट्रैक पर अक्सर लोग गाड़ियां पार्क कर देते हैं, जिससे पैदल चलने वालों की सुरक्षा खतरे में पड़ गई है।

ट्रैफिक रिपोर्ट बताती है कि चंडीगढ़ में गाड़ियों की भारी संख्या के कारण लगातार जाम लगने लगा है और सड़क दुर्घटनाएं भी बढ़ गई हैं। आंकड़ों से पता चला है कि 2019 में कुल मौतों में पैदल यात्रियों का हिस्सा 35 प्रतिशत था, जो 2023 में बढ़कर 42 प्रतिशत हो गया। साइकिल चलाने वालों की मौतें 2019 में 10 प्रतिशत के मुकाबले 2023 में 18 प्रतिशत तक बढ़कर लगभग दोगुनी हो गईं। 2023 में, 90 प्रतिशत सड़क दुर्घटनाएं ज्यादा तेजी से गाड़ी चलाने (ओवर-स्पीडिंग) के कारण हुईं, और इनमें ज्यादातर निजी कारें शामिल थीं। यातायात रिपोर्ट के अनुसार, चंडीगढ़ में ज्यादातर पैदल चलने वालों की मौतें और चोटें उन जगहों पर हुईं, जहां पैदल यात्रियों के लिए जरूरी सुविधाएं (जैसे फुटपाथ) नहीं थीं। 25 पैदल यात्रियों की मौत उन इलाकों में हुई, जहां फुटपाथ थे ही नहीं। 3 अन्य पैदल यात्री जेब्रा क्रॉसिंग पार करते समय मारे गए।

**गाजा में हुई इस पर्यावरणीय त्रासदी की पुष्टि संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) की नई रिपोर्ट ने भी की है। इस रिपोर्ट के मुताबिक गाजा पट्टी में दो वर्षों से जारी संघर्ष ने पर्यावरण को अभूतपूर्व नुकसान पहुंचाया है।**

चंडीगढ़ में बढ़ता वायु प्रदूषण लोगों के स्वास्थ्य पर, खासकर फेफड़ों से जुड़ी बीमारियों पर बुरा असर डाल रहा है। पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल एजुकेशन एंड रिसर्च, चंडीगढ़ के प्रोफेसर जे.एस. ठाकुर बताते हैं कि हवा की गुणवत्ता खराब होने के कारण "क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज" (सीओपीडी) के मामलों में काफी बढ़ोतरी हुई है। यह फेफड़ों से जुड़ी एक गंभीर बीमारी है। प्रोफेसर ठाकुर के अनुसार, "हम जितने भी कैंसर के मामले देखते हैं, उनमें फेफड़ों का कैंसर पहले नंबर पर है। यह कैंसर

मुख्य रूप से धूम्रपान से होता है, लेकिन वायु प्रदूषण इसे और भी बदतर बना देता है। 2017-18 में, फेफड़ों का कैंसर कुल कैंसर के मामलों का 11.5 प्रतिशत था। यह चिंताजनक है। उन्होंने यह भी बताया कि वायु प्रदूषण की वजह से बच्चों में तपेदिक (टीबी) और सांस से जुड़ी बीमारियां (जैसे अस्थमा, ब्रोन्काइटिस) भी बढ़ रही हैं।

चंडीगढ़ के परिवहन विभाग के अधिकारियों ने खुद माना है कि शहर की "व्यापक गतिशीलता योजना, 2031" (सीएमपी 2031), जिसमें मेट्रो और बस रैपिड ट्रांजिट (बीआरटी) जैसे बड़े प्रस्ताव थे, अभी तक पूरी तरह लागू नहीं हुई है। इस योजना के तहत बाहरी रिंग रोड और दूसरी बड़ी बुनियादी ढांचा परियोजनाओं पर भी काम शुरू नहीं हो पाया है। एक अधिकारी ने चिंता जताई कि ज्यादा निर्माण कार्य से शहर की हवा और खराब हो सकती है और उसकी अच्छी तरह से बनी सड़कों की योजना (ग्रिड लेआउट) भी बिगड़ सकती है। इस संकट से निपटने के लिए प्रशासन निजी वाहनों की संख्या की बढ़ोतरी रोकने और इलेक्ट्रिक वाहनों (ईवी) को बढ़ावा देने पर जोर दे रहा है।

नवनीत कुमार श्रीवास्तव बताते हैं, "नई नीति में इलेक्ट्रिक वाहनों को ज्यादा महत्व दिया गया है, खासकर इसलिए क्योंकि 10 किलोमीटर के दायरे वाले छोटे से शहर में भी लोग सार्वजनिक परिवहन का इस्तेमाल नहीं करना चाहते।" विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग ने सितंबर 2022 में ईवी पॉलिसी की शुरुआत की। इसमें इलेक्ट्रिक वाहन खरीदने पर सब्सिडी और रजिस्ट्रेशन फीस माफ करने जैसे फायदे दिए गए थे। श्रीवास्तव ने दावा किया कि इसके परिणामस्वरूप, चंडीगढ़ में इलेक्ट्रिक वाहनों का इस्तेमाल 15 प्रतिशत तक बढ़ गया, जो देश में सबसे ज्यादा है। प्रशासन का लक्ष्य है कि 2025-26 तक ईवी का इस्तेमाल 18 प्रतिशत और 2035 तक 70 प्रतिशत तक बढ़ाया जाए। हालांकि, इलेक्ट्रिक साइकिलों के लिए भी 4,000 रुपए की सब्सिडी दी गई थी, लेकिन अधिकारियों ने माना है कि इनकी बिक्री अच्छी नहीं हुई है।

**गाजा में हुई इस पर्यावरणीय त्रासदी की पुष्टि संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) की नई रिपोर्ट ने भी की है। इस रिपोर्ट के मुताबिक गाजा पट्टी में दो वर्षों से जारी संघर्ष ने पर्यावरण को अभूतपूर्व नुकसान पहुंचाया है।**

सिद्धू चेतावनी देते हैं कि अगर हम पेट्रोल कारों की जगह इलेक्ट्रिक कारें ले लेते हैं, लेकिन निजी कारों का इस्तेमाल कम नहीं करते, तो ट्रैफिक जाम खत्म नहीं होगा। वह इसे "एक निजी कमरे से निकलकर दूसरे निजी कमरे में जाने" जैसा बताते हैं, जिसका कोई मतलब नहीं है और इससे समस्या जस की तस बनी रहेगी।

वहीं, प्रमोद शर्मा को इन बदलावों से सुधार होने की उम्मीदें बनी हुई हैं। वह कहते हैं, "चंडीगढ़ को अभी भी सुधारा जा सकता है। दूसरे मेट्रो शहर शायद इस स्थिति से बाहर न निकल पाएं, लेकिन चंडीगढ़ का पुराना आकर्षण वापस लाया जा सकता है। इसके लिए शहर को पैदल चलने वालों और साइकिल चलाने वालों के लिए ज्यादा अनुकूल बनाना जरूरी है, जैसा कि ले कॉर्बुसीयर (चंडीगढ़ के डिजाइनर) ने सोचा था। उनका मानना था कि लोग चंडीगढ़ में प्रकृति देखने आएंगे, न कि कारें।" यह दिखाता है कि शहर की मूल योजना में प्रकृति और पैदल चलने वालों को महत्व दिया गया था। ■

(साभारःसीएसई)

# युगांतर प्रकृति

**प्रकृति एवं पर्यावरण को समर्पित मासिक पत्रिका**

**प्रकृति, पर्यावरण, सामाजिक उत्थान, क्षमता संवर्धन शोध एवं विकास तथा राष्ट्रीय गौरव के लिए समर्पित संस्था**

## सदस्यता शुल्क

| | | |
|---|---|---|
| 1 | वार्षिक | 250/- |
| 2 | पंचवर्षीय | 1,200/- |
| 3 | दस वर्षीय | 2400/- |
| 4 | आजीवन | 5,000/- |

## विज्ञापन दर

| | | |
|---|---|---|
| 1 | बैक पेज | 1,00,000/- |
| 2 | इनसाइड कवर पेज | 90,000/- |
| 3 | फुल पेज | 75,000/- |
| 4 | हाफ पेज | 50,000/- |

### भुगतान संबंधित निर्देश

भुगतान कृपया चेक/डीडी/आरटीजीएस द्वारा Nature Foundation के नाम से करें

Account Details

**NATURE FOUNDATION**

Account No. : 3611740792
Kotak Mahindra Bank
IFSC Code : KKBK0005631

### विज्ञापन संबंधित निर्देश

कृपया अपना विज्ञापन पीडीएफ अथवा जेपीजी फॉर्मेट में yugantarprakriti@gmail.com ईमेल या डाक द्वारा युगांतर प्रकृति, सेंट्रल स्कूल के समीप, सिद्रोल, नामकुम, रांची-834010 के पते पर भेजें।

### विशेष सहयोग

'युगांतर प्रकृति' का प्रकाशन नेचर फाउंडेशन के द्वारा किया जाता है, जो प्रकृति एवं पर्यावरण को समर्पित एक गैर लाभकारी ट्रस्ट है। पत्रिका के सुगम प्रकाशन हेतु Nature Foundation के नाम चेक अथवा डीडी के माध्यम से यथासंभव आर्थिक सहयोग आमंत्रित है।

## झारखंड के वनों में संकट

# वन्य जीव संरक्षण की अनदेखी और उभरती चुनौतियां

**भारत जैसे जैव विविधता से भरपूर देश में वन्य जीव संरक्षण केवल एक पर्यावरणीय मुद्दा नहीं, बल्कि अस्तित्व का प्रश्न है। हमारा देश 17 मेगा-डाइवर्स देशों में से एक है, जहां चार जैव विविधता हॉटस्पॉट हैं। लेकिन तेजी से बढ़ते शहरीकरण, वनों की कटाई, खनन और जलवायु परिवर्तन के कारण यह विविधता खतरे में है। वन्य जीव संरक्षण की जरूरत इसलिए पड़ी क्योंकि ये जीव पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखते हैं। उदाहरण के तौर पर जंगलों में शिकारियों जैसे बाघ और हाथी बीज प्रसार और शाकाहारी पौधों के नियंत्रण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बिना इनके, मिट्टी का कटाव बढ़ेगा, बाढ़ और सूखा आम हो जाएगा।**

■ विद्या एस.

आर्थिक दृष्टि से, वन्य जीव पर्यटन से अरबों रुपये की कमाई करते हैं। 2023 तक भारत के 1014 संरक्षित क्षेत्रों ने लाखों पर्यटकों को आकर्षित किया, जो स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करते हैं। सांस्कृतिक रूप से ये जीव हमारी लोककथाओं और धार्मिक मान्यताओं का हिस्सा हैं। हाथी गणेश का प्रतीक है। लेकिन अवैध शिकार, आवास हानि और मानव-वन्य जीव संघर्ष ने स्थिति को चिंताजनक बना दिया है। भारत में हर साल सैकड़ों वन्य जीव मरते हैं और यदि संरक्षण न किया गया तो आने वाली पीढ़ियां इस प्राकृतिक धरोहर से वंचित रह जाएंगी। झारखंड जैसे वन-समृद्ध राज्य में यह संकट और गहरा है, जहां प्राकृतिक संसाधनों का दोहन विकास के नाम पर हो रहा है।

### झारखंड में वन्य जीव संरक्षण की वर्तमान स्थिति

झारखंड छोटानागपुर पठार पर बसा है। यह कभी घने जंगलों और विविध वन्य जीवन का गढ़ था। राज्य का 29% क्षेत्र वनों से आच्छादित है, लेकिन संरक्षण की स्थिति चिंताजनक है। 2025 में जारी सीएजी रिपोर्ट के अनुसार, राज्य के वन्यजीव अभयारण्यों में वृक्ष आवरण, आवास गुणवत्ता और जानवरों की आबादी में गिरावट आई है। पलामू टाइगर रिजर्व जैसे प्रमुख क्षेत्रों में गौर (भारतीय भैंस) की संख्या तेजी से कम हो रही है, जो पारिस्थितिक संतुलन को प्रभावित कर रही है।

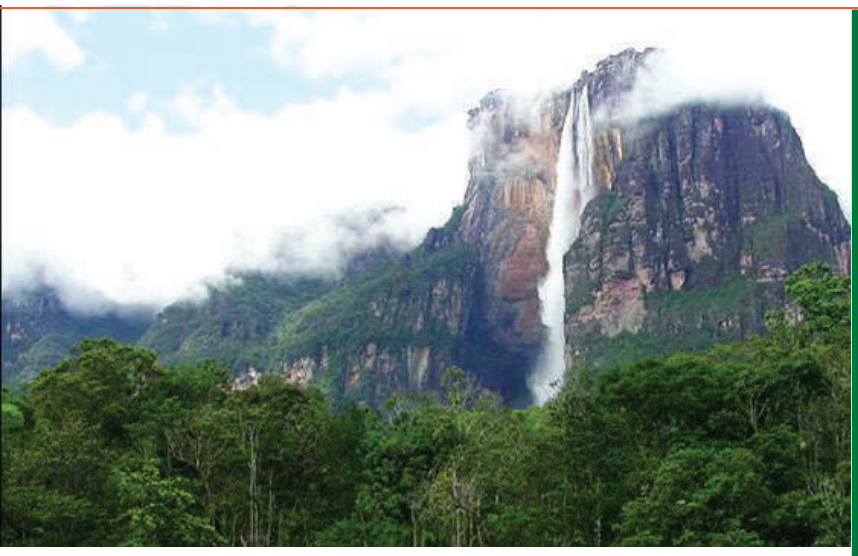

हालांकि, कुछ सकारात्मक कदम भी उठाए गए हैं। सुप्रीम कोर्ट के 9 अक्टूबर 2025 के ऐतिहासिक फैसले ने सारंडा जंगलों को वन्यजीव अभयारण्य घोषित करने का निर्देश दिया, जो 314.86 वर्ग किमी क्षेत्र को बचाएगा। यह क्षेत्र जैव विविधता से भरपूर है, लेकिन खनन और नक्सल प्रभाव के कारण उपेक्षित रहा। फिर भी, अधिसूचना में देरी ने कोर्ट की नाराजगी भरी। 27 सितंबर 2025 को सुप्रीम कोर्ट ने झारखंड सरकार को फटकार लगाई। राज्य में 11 वन्यजीव अभयारण्य और एक टाइगर रिजर्व हैं, लेकिन इनकी प्रभावी प्रबंधन की कमी है। मानव-वन्य जीव संघर्ष बढ़ रहा है, खासकर हाथियों के कारण, जो विकास परियोजनाओं से विस्थापित हो रहे हैं। कुल मिलाकर, संरक्षण प्रयास हैं, लेकिन क्रियान्वयन कमजोर है।

## हाथी की घटती संख्या: आंकड़ों की कहानी

झारखंड और पड़ोसी राज्यों में हाथी आबादी का पतन एक चेतावनी है। भारत की पहली डीएनए-आधारित हाथी गणना 2025 के अनुसार, देश में जंगली हाथियों की संख्या 2017 के 29,964 से घटकर 2025 में 22,446 रह गई, यानी 25% की कमी। झारखंड में यह गिरावट और भयावह है। 2017 में 679 हाथी थे, जो 2025 में घटकर मात्र 217 रह गए, यानी 68% की कमी। पड़ोसी ओडिशा में 912 हाथी हैं, लेकिन यहां भी संघर्ष बढ़ा है। बिहार और पश्चिम बंगाल में हाथी कॉरिडोर बाधित होने से मृत्यु दर ऊंची है। बीते वर्षों के आंकड़े बताते हैं कि हाथी मृत्यु मुख्यतः मानव संघर्ष, बिजली तारों से विद्युत शॉक और आवास हानि से हो रही है। झारखंड में 2015-2025 के बीच औसतन 50-60 हाथी सालाना मारे गए। 2020-2024 में 23 वर्षों के डेटा से पता चलता है कि वयस्क नर हाथी सबसे अधिक प्रभावित हैं। मानव पक्ष पर 2020-2025 में 474 लोग हाथी हमलों से मारे गए। ओडिशा में 400-500 मानव मौतें सालाना, जबकि पश्चिम बंगाल में इंटर-स्टेट कॉरिडोर बाधित होने से संघर्ष बढ़ा।

## लौह अयस्क के चलते 20 प्रतिशत जंगल कटे

खनन (झारखंड में लौह अयस्क के लिए 20% जंगल कटे), रेल-पथ और सड़कें जो कॉरिडोर तोड़ रही हैं। 2025 की रिपोर्ट में कहा गया कि पूर्वी घाट क्षेत्र में हाथी आबादी 1,891 है, लेकिन हानि दर 18% सालाना। यदि यही ट्रेंड चला तो 2030 तक झारखंड में हाथी विलुप्ति के कगार पर पहुंच सकते हैं। संरक्षण के लिए कॉरिडोर बहाली और समुदाय भागीदारी जरूरी है।

## खोई हुई धरोहर

झारखंड में कभी बहुलता में पाए जाने वाले कई वन्य प्राणी अब विलुप्त या संकटग्रस्त हैं। राज्य में 100 फ्लोरा-फौना प्रजातियों में से 27 संकटग्रस्त हैं। एशियाई हाथी (लिस्टेड क्रिटिकली एंडेंजर्ड), आलसी भालू (वुल्नरेबल), भारतीय बाघ (लिस्टेड), भारतीय फ्लैपशेल कछुआ (वुल्नरेबल) और व्हाइट रंप्ड वल्चर प्रमुख हैं। गिद्ध प्रजातियां भारतीय गिद्ध और हिमालयी गिद्ध की संख्या 91% घटी है, मुख्यतः दवाओं के विषाक्त प्रभाव से। पलामू रिजर्व में गौर की आबादी 2015 के 500 से घटकर 2025 में 200 रह गई। भारतीय भेड़िया, जो घासभूमि पर निर्भर है, आवास हानि से लुप्ति के कगार पर है। पहले संदर्भ में पाए जाने वाले चीतल और सांभर अब दुर्लभ हैं। विलुप्त प्रजातियों में हिमालयन क्वेल और पिंक-हेडेड डक शामिल हैं, जो झारखंड के वेटलैंड्स से गायब हो चुके। ये कमी जैव चक्र को बाधित कर रही है, जैसे परागण और शिकार श्रृंखला। संरक्षण के बिना, राज्य की जैव विविधता और गरीब हो जाएगी। ■

# वन विभाग की जंग और संसाधनों की कमी

झारखंड के आंकड़ों के अनुसार 25 वर्षों से सारंडा के जंगलों में तैनात एक फॉरेस्टर कहते हैं, हमारे पास इरादा है, लेकिन हथियार नहीं। 2024-25 के बजट में वन विभाग को मात्र 1,200 करोड़ रुपये मिले, जबकि आवश्यकता 3,000 करोड़ की थी। स्टाफ की कमी सबसे बड़ी समस्या है, सेक्शन स्ट्रेंथ 3,26,049 के मुकाबले 1,67,203 कर्मचारी हैं, यानी 49% पद रिक्त। जिससे पेट्रोलिंग सीमित हो जाती है। 2025 की वनाग्नि मौसम में विभाग को 500 अग्निशामक उपकरण चाहिए थे, लेकिन केवल 150 मिले। एक घटना में, सारंडा में आग लगने पर टीम के सदस्यों ने हाथ से पानी डालकर बुझाया, क्योंकि ड्रोन और जीपीएस ट्रैकर्स अनुपलब्ध थे। खनन माफियाओं और नक्सलियों से मुकाबला करते हुए, विभाग को आधुनिक हथियारों की कमी खलती है। मानव-हाथी संघर्ष में, सोलर फेंसिंग के लिए फंड न होने से ग्रामीणों का भरोसा टूट रहा। 2024 में हमने 20 हाथी कॉरिडोर चिह्नित किए, लेकिन बाड़ लगाने के लिए बजट न आने से वे कागजों पर ही रह गए। राज्य सरकार ने 24 प्रस्तावों को मंजूरी दी, लेकिन क्रियान्वयन धीमा है। ये संसाधन कमी न केवल संरक्षण को प्रभावित कर रही, बल्कि कर्मचारियों की सुरक्षा को भी। फिर भी, स्थानीय समुदायों के साथ सहयोग से कुछ सफलताएं मिलीं, जैसे पलामू में सामुदायिक पेट्रोलिंग। लेकिन बिना केंद्रीय सहायता और बजट वृद्धि के, यह जंग असंभव लगती है।

## संरक्षण की राह पर कदम

झारखंड के वन्य जीव संकट में हैं, लेकिन आंकड़े चेतावनी हैं। हाथी आबादी 68% घटी, 27 प्रजातियां संकटग्रस्त। वन विभाग को मजबूत संसाधन देकर, कॉरिडोर बहाल कर और समुदायों को जोड़कर हम इसे उलट सकते हैं। यदि अब न जागे, तो आने वाली पीढ़ियां केवल कहानियां सुनेंगी। संरक्षण अब जरूरत नहीं, अनिवार्य है। ■

# जंगल और कृषि के बीच जरूरी है तालमेल

**नई अंतरराष्ट्रीय रिपोर्ट में कहा गया है कि जंगल तापमान, बारिश और जल चक्र को संतुलित रखते हैं, ऐसे में यदि जंगलों की कटाई बढ़ी तो फसलें, किसान, मजदूर और ग्रामीण जीवन सबसे पहले प्रभावित होंगे**

■ **ललित मौर्या**

जलवायु संकट से बचने के लिए ब्राजील के बेलेम शहर में चल रहे अंतराष्ट्रीय सम्मेलन कोप-30 में भले ही जंगल चर्चा के केंद्र में हैं, लेकिन इस बात पर बहुत कम बात हुई है यह जंगल कृषि की रीढ़ भी हैं। इस बारे में बैठक के दौरान जारी एक नई रिपोर्ट "क्लाइमेट एंड इकोसिस्टम सर्विस बेनिफिट्स ऑफ फॉरेस्ट्स एंड ट्रीज फॉर एग्रीकल्चर" के मुताबिक जलवायु परिवर्तन के इस दौर में पर्यावरण अनुकूल कृषि और खाद्य प्रणाली तैयार करने के लिए जंगलों और कृषि के बीच तालमेल बेहद जरूरी है। यह रिपोर्ट संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ), स्टॉकहोम एनवायरमेंट इंस्टीट्यूट, कंजरवेशन इंटरनेशनल और नेचर कंजरवेंसी ने मिलकर जारी की है। रिपोर्ट बताती है कि जंगल और पेड़ तापमान को नियंत्रित करने, बारिश बनाए रखने और जल चक्र को नियमित करने जैसे अहम काम करते हैं और यही सेवाएं फसल उत्पादन की नींव हैं। जंगल महज पेड़ों का झुंड नहीं बल्कि कृषि की जीवनरेखा भी हैं। लेकिन जिस तरह से जंगलों का विनाश हो रहा है, उससे तापमान बढ़ रहा है, बारिश घट रही है और दुनिया में कृषि के साथ-साथ खेतों में काम करने वाले किसानों, मजदूरों की सेहत पर भी खतरा मंडरा रहा है।

## जंगलों के कटने से बढ़ा तापमान, गड़बड़ाया संतुलन

रिपोर्ट के मुताबिक जंगल और पेड़ों की वे सेवाएं, जिन्हें हम अक्सर अनदेखा कर देते हैं, हमारी कृषि और खाद्य प्रणाली को मजबूत बना सकती हैं। हालांकि इन फायदों को जमीनी हकीकत में बदलने के लिए बेहतर नीतियों, निवेश और समझदार प्रबंधन की जरूरत है। रिपोर्ट में यह भी चेताया है कि जंगलों को काटे जाने का असर तुरंत दिखाई देता है। इससे स्थानीय तापमान बढ़ता है, बारिश कम होती है और खेतों के लिए जोखिम बढ़ जाता है। रिपोर्ट में ब्राजील का उदाहरण देते हुए लिखा है कि वहां उष्णकटिबंधीय जंगलों को खेतों में बदलने से वाष्पीकरण 30 फीसदी तक घटा है, जिससे तापमान बढ़ रहा है और बारिश का पैटर्न गड़बड़ा गया है। रिपोर्ट में एक अन्य अध्ययन के हवाले से कहा गया है कि दुनिया के 155 देशों में कृषि को मिलने वाली बारिश का करीब 40 फीसदी हिस्सा सीमापार के जंगलों पर निर्भर

है। यानी जंगलों का संरक्षण महज पर्यावरण ही नहीं, बल्कि वैश्विक खाद्य सुरक्षा से जुड़ा मुद्दा भी है। इसी तरह जंगल केवल मौसम ही नहीं, बल्कि लोगों की सेहत को भी बचाते हैं। रिपोर्ट से पता चला है कि जंगलों को काटने से जमीन का तापमान अक्सर कई डिग्री तक बढ़ जाता है। इससे खासकर उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में गर्मी कहीं ज्यादा बढ़ने लगती है। रिपोर्ट में शामिल एक हालिया अध्ययन के मुताबिक, उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में जंगल कटने से बढ़ी गर्मी ने 2001 से 2020 के बीच हर साल करीब 28,000 लोगों की जिंदगियां छीन ली हैं। इसके अलावा, 2003 से 2018 के बीच जिन क्षेत्रों में जंगल काटे गए, वहां तापमान बढ़ने से करीब 28 लाख मजदूरों के सुरक्षित कामकाज के घंटे कम हो गए हैं। इसके उलट, खड़े जंगल खेतों और ग्रामीण इलाकों को ठंडक देते हैं, फसलों और मजदूरों को गर्मी से बचाते हैं। इससे ग्रामीण मजदूरों पर गर्मी का दबाव कम होता है, स्वास्थ्य सुरक्षित रहता है और उत्पादकता भी बढ़ती है।

रिपोर्ट में समाधान पर भी प्रकाश डाला है, अगर दुनिया भर में खोए उष्णकटिबंधीय जंगलों का महज आधा हिस्सा भी बहाल कर दिया जाए, तो धरती का तापमान एक डिग्री सेल्सियस तक कम हो सकता है। इससे बारिश, जल चक्र और स्थानीय जलवायु फिर से संतुलित हो सकती है, जो कृषि और जल सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है। रिपोर्ट यह भी याद दिलाती है कि जंगल परागण, प्राकृतिक कीट नियंत्रण, पोषण चक्र, मिट्टी के कटाव को रोकने जैसी सेवाएं भी देते हैं जिन्हें हम अक्सर महसूस ही नहीं करते लेकिन कृषि इनके बिना असंभव है।

इसी तरह कृषि भूमि में जंगल के हिस्सों जैसे शेल्टर बेल्ट, नदी किनारों की हरित पट्टियां और छोटे वन-पैच को शामिल करना जलवायु परिवर्तन के जोखिमों से बचाव का प्रभावी तरीका है। एफएओ के वानिकी निदेशक ज़ीमिन वू का कहना है, "अक्सर जंगल और पेड़ों को कृषि की जमीन के लिए प्रतिस्पर्धी या कृषि से अलग माना जाता है, लेकिन सच यह है कि जंगलों का संरक्षण और बहाली कृषि उत्पादकता को बढ़ाने के लिए बेहद जरूरी है।" अंत में, रिपोर्ट यह स्पष्ट संदेश देती है कि अब समय आ गया है कि जैव विविधता, पर्यावरण संरक्षण, कृषि, जल संसाधन और सार्वजनिक स्वास्थ्य को अलग-अलग मुद्दों की तरह नहीं देखना चाहिए। इन सभी को साथ जोड़कर ऐसी नीतियां बनानी होंगी जो जंगल और कृषि के गहरे संबंध को समझें, ताकि किसान समुदाय समृद्ध रहें और वे जिन प्राकृतिक प्रणालियों पर निर्भर हैं, वे भी स्वस्थ बनी रहें। हमें नहीं भूलना चाहिए कि जंगलों के बिना कृषि कमजोर है, और खेती के बिना ग्रामीण जीवन खतरे में पड़ जाएगा। ■

• हेल्थ •

# कम आर्सेनिक ज्यादा जीवन

▪ दयानिधि

दुनिया के कई देशों में, खासकर एशिया में, भूजल में आर्सेनिक एक बड़ी समस्या है। आर्सेनिक एक प्राकृतिक धात्विक तत्व है जो भूजल में घुल जाता है और बिना रंग-गंध के होने के कारण लोग इसे पीते रहते हैं, जबकि यह शरीर में धीरे-धीरे गंभीर नुकसान पहुंचाता है। हाल ही में प्रकाशित एक अध्ययन ने साबित किया है कि अगर लोग आर्सेनिक से दूषित पानी पीना बंद कर दें, तो उनकी मौत का खतरा 50 प्रतिशत तक कम हो सकता है, चाहे वे कई सालों तक आर्सेनिक के संपर्क में रहे हों। कोलंबिया यूनिवर्सिटी, कोलंबिया मेलमैन स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ और न्यूयॉर्क यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों ने बांग्लादेश में लगभग 11,000 वयस्कों पर 20 साल तक शोध किया। यह अध्ययन जर्नल ऑफ द अमेरिकन मेडिकल एसोसिएशन में प्रकाशित हुआ है। इसे अब तक का सबसे मजबूत और लंबी अवधि वाला अध्ययन माना जा रहा है, जिसने आर्सेनिक-मुक्त पानी के स्वास्थ्य लाभों को सीधे व्यक्ति-दर-व्यक्ति स्तर पर मापा। अमेरिका सहित दुनिया के कई देशों में आज भी करोड़ों लोग ऐसे भूजल पर निर्भर हैं जिसमें आर्सेनिक की मात्रा सीमा से ऊपर हो सकती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने 10 माइक्रोग्राम प्रति लीटर से अधिक आर्सेनिक को असुरक्षित माना है। बांग्लादेश में यह समस्या सामूहिक स्तर पर इतनी बड़ी है कि डब्ल्यूएचओ इसे "मानव इतिहास का सबसे बड़ा सामूहिक जहर-प्रभाव" कहता है। अध्ययन बांग्लादेश के अराईजार क्षेत्र में किया गया, जहां हजारों परिवार पीने के लिए ट्यूबवेल पर निर्भर हैं। इन ट्यूबवेलों में आर्सेनिक का स्तर एक कुएं से दूसरे कुएं तक बहुत अलग-अलग पाया जाता है, कुछ में नगण्य मात्रा, तो कुछ में अत्यंत ज्यादा।

शोध पत्र में शोधकर्ता के हवाले से कहा गया है कि 10,000 से अधिक कुओं की जांच की, प्रतिभागियों के मूत्र में आर्सेनिक स्तर को बार-बार मापा गया। हर व्यक्ति पर 20 वर्षों तक स्वास्थ्य के आंकड़े दर्ज किए गए, मौत के कारणों को दर्ज किया गया। यह तरीका बेहद विश्वसनीय माना जाता है, क्योंकि मूत्र परीक्षण शरीर में पहुंच चुके वास्तविक आर्सेनिक स्तर को दिखाता है। आर्सेनिक कम करने पर मौत का खतरा आधा हो जाता है, अध्ययन के सबसे बड़े और चौंकाने वाले नतीजे यह बताते हैं कि जिन लोगों ने भारी आर्सेनिक वाले पानी से कम-आर्सेनिक पानी की ओर रुख किया, उनकी मौत का खतरा 50 फीसदी तक कम हुआ। जिन लोगों के मूत्र में आर्सेनिक की मात्रा ऊंचे स्तर से घटकर कम स्तर पर आ गई, उनकी मृत्यु दर वैसी ही हो गई जैसी उन लोगों की थी जो कभी अधिक आर्सेनिक के संपर्क में नहीं रहे थे।

शोधकर्ताओं ने तुलना इस तरह की-जैसे धूम्रपान छोड़ने पर धीरे-धीरे बीमारी का खतरा कम होता है, वैसे ही आर्सेनिक-मुक्त पानी पीने पर भी समय के साथ जोखिम घटता जाता है। आर्सेनिक कम क्यों हुआ? अध्ययन के सालों के दौरान बांग्लादेश में कई पहलें की गई, जिसमें कुओं की बड़े पैमाने पर जांच की गई। सुरक्षित (कम-आर्सेनिक) और असुरक्षित (भारी-आर्सेनिक) वाले कुओं को लाल व हरा रंग देकर चिन्हित करना। नए, गहरे सरकारी कुओं का निर्माण करना, लोगों का सुरक्षित कुओं की ओर स्वेच्छा से जाना अहम है। लोगों द्वारा उपयोग किए जाने वाले कुओं में आर्सेनिक की मात्रा 70 फीसदी तक कम हुई, मूत्र परीक्षण से पता चला कि मनुष्यों के शरीर में आर्सेनिक का स्तर 50 फीसदी कम हो गया। यही कमी मृत्यु दर में तेज गिरावट का प्रमुख कारण बनी। शोध में कहा गया है कि जब लोगों को आर्सेनिक-मुक्त पानी मिलता है, तो वे न केवल भविष्य की बीमारियों से बचते हैं, बल्कि पिछले वर्षों के नुकसान से भी उबरने लगते हैं। यह अध्ययन अब तक का सबसे ठोस सबूत है कि आर्सेनिक कम करने से सीधे-सीधे मौत का खतरा घटता है। ■

# भारत में सुधरी है चीतों की स्थिति

■ युगांतर प्रकृति नेटवर्क

**चीता अपनी गति का इस्तेमाल सीधे हमले में नहीं करता, बल्कि पहले शिकार के जितना संभव हो सके, करीब पहुँचने की कोशिश करता है। वह घास, झाड़ियों या किसी अन्य आड़ का उपयोग करके छिपता है। वे आम तौर पर 50 से 100 मीटर की दूरी तक शिकार के पास पहुँच जाते हैं, इससे पहले कि शिकार उन्हें देख पाए।**

दिसंबर को अंतर्राष्ट्रीय चीता दिवस मनाने का कारण एक विशिष्ट चीते की याद और उसके संरक्षण की दिशा में किए गए प्रयासों से जुड़ा है। इस दिवस की शुरुआत डॉ. लॉरी मार्कर ने की थी, जो चीता संरक्षण कोष की संस्थापक हैं। डॉ. मार्कर ने खय्याम नामक एक अनाथ चीता शावक को पाला था। खय्याम को ओरेगन के वाइल्डलाइफ सफारी में पाला गया और वह पहले शोध प्रोजेक्ट का हिस्सा बना, जिसका उद्देश्य यह निर्धारित करना था कि क्या बंदी-नस्ल के चीतों को शिकार करना सिखाया जा सकता है।1977 में, डॉ. मार्कर खय्याम को नामीबिया ले गईं, जहाँ उन्होंने पहली बार देखा कि मानव-वन्यजीव संघर्ष के कारण चीते कितने गंभीर खतरे में हैं। किसानों द्वारा अपने मवेशियों को बचाने के लिए बड़ी संख्या में चीतों को मारा जा रहा था। खय्याम के साथ अपने अनुभवों के कारण, डॉ. मार्कर ने अपना जीवन चीता संरक्षण के लिए समर्पित कर दिया। उन्होंने 4 दिसंबर, जो कि खय्याम का जन्मदिन था, को अंतर्राष्ट्रीय चीता दिवस के रूप में नामित किया।

2010 से हर साल 4 दिसंबर को यह दिवस मनाने का मुख्य उद्देश्य दुनिया के सबसे तेज़ भूमि जानवर के सामने आने वाले खतरों के बारे में जागरूकता बढ़ाना और उनके अस्तित्व को सुनिश्चित करने के लिए वैश्विक संरक्षण प्रयासों को बढ़ावा देना है। दुनिया में सबसे ज्यादा चीते नामीबिया में पाए जाते हैं। नामीबिया को द चीता कैपिटल ऑफ द वर्ल्ड भी कहा जाता है। ***प्रमुख चीता आबादी वाले क्षेत्र इस प्रकार हैं:***

**नामीबिया:** यहाँ जंगली चीतों की सबसे बड़ी आबादी है, अनुमानित रूप से लगभग 2,500 से 3,500 चीते हैं।

**दक्षिणी अफ्रीका:** नामीबिया के अलावा, बोत्सवाना, दक्षिण अफ्रीका, अंगोला, मोजाम्बिक और ज़ाम्बिया जैसे देशों को मिलाकर दक्षिणी अफ्रीका में चीतों की एक बड़ी आबादी (लगभग 4,300) निवास करती है।

**पूर्वी अफ्रीका:** केन्या और तंजानिया में भी चीतों की महत्वपूर्ण आबादी है, हालांकि इनकी संख्या दक्षिणी अफ्रीका की तुलना में कम है। विश्व स्तर पर, चीतों की कुल जंगली आबादी लगभग 7,100 मानी जाती है, जिसमें से अधिकांश उप-सहारा अफ्रीका के इन क्षेत्रों में हैं। एशिया में, एशियाई चीते केवल ईरान में बहुत कम संख्या में (लगभग 12) पाए जाते हैं और वे गंभीर रूप से लुप्तप्राय हैं। भारत में चीतों की स्थिति प्रोजेक्ट चीता के तहत चल रहे पुनर्वास कार्यक्रम के कारण महत्वपूर्ण और गतिशील है। भारत में चीते 1952 में विलुप्त घोषित कर दिए गए थे। वर्तमान स्थिति इस प्रकार है: -

**कुल चीते:** वर्तमान में भारत में कुल 27 चीते हैं, जिनमें से 16 शावक भारत में ही पैदा हुए हैं।

**स्थान:** अधिकांश चीते मध्य प्रदेश के कूनो राष्ट्रीय उद्यान में हैं, जबकि कुछ को हाल ही में गांधी सागर वन्यजीव अभयारण्य में स्थानांतरित किया गया है।

## प्रोजेक्ट चीता की शुरुआत

इस महत्वाकांक्षी परियोजना की शुरुआत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 17 सितंबर 2022 को अपने जन्मदिन पर की थी। पहले चरण में, सितंबर 2022 में नामीबिया से 8 चीते लाए गए। दूसरे चरण में फरवरी 2023 में दक्षिण अफ्रीका से 12 और चीते लाए गए, जिससे कुल आयातित चीतों की संख्या 20 हो गई। इस परियोजना का लक्ष्य भारत के घास के मैदानों और अर्ध-शुष्क पारिस्थितिकी तंत्र में चीते की कार्यात्मक भूमिका को फिर से स्थापित करना है।

**मृत्यु दर:** परियोजना शुरू होने के बाद से कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। विभिन्न कारणों से नौ आयातित वयस्क चीतों और 10 भारत में जन्मे शावकों की मृत्यु हो चुकी है।

**प्रजनन सफलता:** एक बड़ी सफलता यह है कि भारत में शावकों का जन्म हुआ है। हाल ही में, भारत में जन्मी पहली मादा चीता मुखी ने पाँच शावकों को जन्म दिया है, जिसे परियोजना की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि माना जा रहा है। भारत में अब तक कुल 26 शावकों का जन्म हुआ है। अधिकारियों का कहना है कि शावकों की उत्तरजीविता दर (61.05%) वैश्विक औसत (लगभग 40%) से बेहतर है।

**नए घर:** चीतों के लिए दूसरा घर मध्य प्रदेश में गांधी सागर वन्यजीव अभयारण्य को बनाया गया है, जहाँ अप्रैल 2025 में दो चीते स्थानांतरित किए गए थे। कुल मिलाकर, चुनौतियों के बावजूद, भारत में चीता परियोजना को देश में एक आत्मनिर्भर चीता आबादी स्थापित करने की दिशा में एक बड़ी सफलता के रूप में देखा जा रहा है।

## चीता प्रमुख विशेषताएं:

**गति:** दुनिया का सबसे तेज़ ज़मीनी जानवर है चीता। यह चीते की सबसे बड़ी खासियत है। चीता लगभग 110 से 120 किलोमीटर प्रति घंटे (70 से 75 मील प्रति घंटे) की अविश्वसनीय गति से दौड़ सकता है। हालांकि, वे इस गति को केवल थोड़ी दूरी (लगभग 400 से 500 मीटर) तक ही बनाए रख सकते हैं, क्योंकि उनका शरीर जल्दी थक जाता है और ज़्यादा गरम हो जाता है। वे केवल 3 सेकंड में 0 से 100 किमी/घंटा की रफ्तार पकड़ सकते हैं, जो कि अधिकांश स्पोर्ट्स कारों से भी तेज़ है।

**शारीरिक संरचना:** चीते का शरीर गति के लिए ही डिज़ाइन किया गया है। उनका शरीर पतला और सुव्यवस्थित होता है, जिससे हवा का प्रतिरोध कम होता है। उनकी टाँगें लंबी होती हैं, जो उन्हें लंबी छलांग लगाने में मदद करती हैं। उनकी रीढ़ की हड्डी अविश्वसनीय रूप से लचीली होती है, जिससे वे दौड़ते समय अपने शरीर को मोड़ सकते हैं और गति बढ़ा सकते हैं। लंबी और भारी पूंछ स्टीयरिंग व्हील (कार के पहिये) की तरह काम करती है, जिससे वे तेज़ गति से दौड़ते हुए अचानक मुड़ सकते हैं और संतुलन बनाए रख सकते हैं।

**अनोखे पंजे और फर:** बिल्लियों की अधिकांश प्रजातियों के विपरीत, चीते के पंजे पूरी तरह से अंदर नहीं जाते। ये पंजे दौड़ते समय स्पाइक्स (कीलों) की तरह जमीन पर पकड़ बनाने में मदद करते हैं, जैसे ट्रैक रनर जूते पहनते हैं। उनका फर हल्के पीले या भूरे रंग का होता है जिस पर काले धब्बे होते हैं, जो छलावरण में मदद करते हैं। उनकी आँखों के कोनों से मुँह तक काली धारियाँ होती हैं (इन्हें मैलिक स्ट्राइप्स कहते हैं)। ये धारियाँ धूप की चमक को अवशोषित करती हैं, जिससे उन्हें शिकार पर ध्यान केंद्रित करने में मदद मिलती है।

**शिकार का तरीका:** चीते आमतौर पर दिन के दौरान शिकार करते हैं, जबकि अन्य बड़े शिकारी (जैसे शेर और तेंदुए) रात में शिकार करते हैं। इससे प्रतिस्पर्धा कम होती है। वे पहले अपने शिकार के करीब छिपकर जाते हैं और फिर गति का उपयोग करके पीछा करते हैं। चीता गति और चपलता का अद्भुत संयोजन है, जो उसे पृथ्वी पर सबसे कुशल और विशिष्ट शिकारियों में से एक बनाता है। चीता शिकार करने के लिए अपनी अविश्वसनीय गति और चपलता का उपयोग करता है। उसकी शिकार की रणनीति अन्य बड़ी बिल्लियों, जैसे शेर या तेंदुए से अलग होती है।

## ऐसे करता है चीता शिकार

**छिपकर पीछा करना:** चीता अपनी गति का इस्तेमाल सीधे हमले में नहीं करता, बल्कि पहले शिकार के जितना संभव हो सके, करीब पहुँचने की कोशिश करता है। वह घास, झाड़ियों या किसी अन्य आड़ का उपयोग करके छिपता है। वे आम तौर पर 50 से 100 मीटर की दूरी तक शिकार के पास पहुँच जाते हैं, इससे पहले कि शिकार उन्हें देख पाए।

**तेज़ पीछा:** जैसे ही चीते को लगता है कि वह सही दूरी पर है या शिकार ने उसे देख लिया है, वह अचानक बिजली की गति से दौड़ पड़ता है। यह पीछा बहुत तीव्र होता है लेकिन आमतौर पर छोटा होता है। इस दौरान चीता अपनी पूरी गति (110-120 किमी/घंटा) का उपयोग करता है। उनकी पूंछ संतुलन बनाए रखने और अचानक दिशा बदलने में मदद करती है, जिससे वे मुड़ते हुए शिकार का पीछा कर पाते हैं।

**भोजन और चुनौतिया:** शिकार करने के बाद, चीता बहुत थका हुआ होता है और उसे आराम करने के लिए कुछ समय चाहिए होता है ताकि उसका शरीर ठंडा हो सके। इस दौरान वह बहुत कमजोर होता है। शेर, लकड़बग्घे या अन्य बड़े शिकारी अक्सर चीते के शिकार को उससे छीन लेते हैं। इसी कारण चीता तुरंत खाता है और अक्सर घने शाकाहारी इलाके से दूर शांति में खाना पसंद करता है, ताकि उसका शिकार सुरक्षित रह सके। ■

• 14 दिसंबर/विश्व बंदर दिवस पर विशेष •

# बंदरों के प्रति जागरूक होना वक्त की जरूरत

**बंदर दिवस हर साल 14 दिसंबर को मनाया जाने वाला एक अनौपचारिक अंतर्राष्ट्रीय अवकाश है। यह दिन बंदरों, वानरों, टार्सियर और लीमर सहित अन्य सभी गैर-मानव प्राइमेट्स के अनूठे जीवन का जश्न मनाने और उनके संरक्षण के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए समर्पित है।**

▪ युगांतर प्रकृति नेटवर्क

बंदर दिवस की शुरुआत वर्ष 2000 में मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी के कला के छात्र केसी सोर्गे और एरिक मिलिकिन ने की थी। कहानी यह है कि सोर्गे ने मजाक में अपने एक दोस्त के कैलेंडर पर 14 दिसंबर की तारीख के आगे मंकी डे लिख दिया था। इसके बाद, उन्होंने और उनके दोस्तों ने इस तारीख को एक परंपरा के रूप में मनाना शुरू कर दिया, जो धीरे-धीरे दुनिया भर में लोकप्रिय हो गया। इस दिन को मनाने का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं है, बल्कि इसका मुख्य महत्व निम्न बातों में है:

**जागरूकता:** यह दिन लोगों को बंदरों की विभिन्न प्रजातियों, उनके सामने आने वाले खतरों और उनके आवासों के संरक्षण की आवश्यकता के बारे में शिक्षित करता है।

**संरक्षण:** दुनिया भर में बंदरों की कई प्रजातियां लुप्तप्राय हैं। यह दिन वन्यजीव संरक्षण प्रयासों पर ध्यान केंद्रित करने का अवसर प्रदान करता है।

**प्राइमेट्स का सम्मान:** यह अवकाश न केवल बंदरों, बल्कि अन्य प्राइमेट्स जैसे वानरों का भी सम्मान करता है, जो मानव विकास के क्रम में हमारे करीबी रिश्तेदार हैं।

बंदर दिवस के अवसर पर, लोग अक्सर बंदरों से संबंधित कला प्रदर्शनियों, थीम पार्टियों, और चिड़ियाघरों में शैक्षिक कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं।

भारत में गैर-मानव प्राइमेट्स की लगभग 14 से 24 प्रजातियाँ पाई जाती हैं, जिनमें बंदर, लंगूर और गिब्बन शामिल हैं। ये प्रजातियां मुख्य रूप से दो श्रेणियों में आती हैं: मकाक और लंगूर।

**भारत में पाई जाने वाली कुछ प्रमुख प्रजातियाँ इस प्रकार हैं:**

## मकाक

**भारत में मकाक की लगभग छह से दस प्रजातियां पाई जाती हैं:**

**रीसस मकाक:** ये भारत में सबसे आम और व्यापक रूप से पाए जाने वाले बंदर हैं, जो अक्सर शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में देखे जाते हैं।

**बोनट मकाक:** ये मुख्य रूप से दक्षिण भारत के लिए स्थानिक हैं।

**सिंह-पूंछ मकाक:** यह एक लुप्तप्राय प्रजाति है जो विशेष रूप से पश्चिमी घाट के वर्षावनों में पाई जाती है।

**असम मकाक:** ये पूर्वोत्तर भारत और हिमालयी क्षेत्रों में पाए जाते हैं।

**अरुणाचल मकाक:** यह प्रजाति 2004 में खोजी गई थी और अरुणाचल प्रदेश के उच्च-ऊंचाई वाले जंगलों में पाई जाती है।

**स्टंप-टेल्ड मकाक:** इन्हें भालू मकाक भी कहा जाता है, जो अपने छोटे ठूंठदार पूंछ के लिए जाने जाते हैं।

## लंगूर

**भारत में लंगूर की लगभग दस प्रजातियां पाई जाती हैं, जिन्हें अक्सर हनुमान लंगूर या पवित्र लंगूर भी कहा जाता है:**

**ग्रे लंगूर या हनुमान लंगूर:** यह पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में सबसे आम और व्यापक रूप से वितरित लंगूर प्रजाति है।

**नीलगिरि लंगूर:** ये दक्षिण भारत में नीलगिरि पहाड़ियों के लिए स्थानिक हैं।

**सुनहरा लंगूर:** यह एक दुर्लभ और लुप्तप्राय प्रजाति है जो केवल असम और भूटान की सीमा के साथ एक छोटे से क्षेत्र में पाई जाती है।

**कैप्ड लंगूर:** ये मुख्य रूप से पूर्वोत्तर भारत के क्षेत्रों में पाए जाते हैं।

फेयर का पत्ता खाने वाला बंदरः ये भी पूर्वोत्तर भारत में पाए जाते हैं।

## अन्य प्राइमेट्स

**हूलॉक गिब्बन:** भारत में पाई जाने वाली एकमात्र कपि प्रजाति है (बंदर नहीं)। ये पूर्वोत्तर भारत में

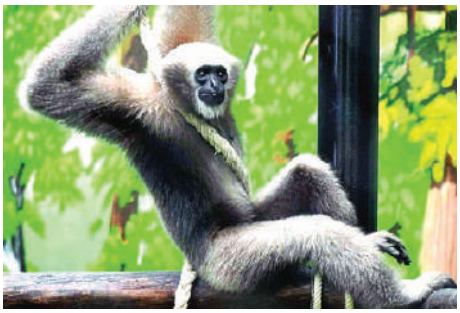

पाए जाते हैं।

**स्लो लोरिस:** ये छोटे, निशाचर (रात में सक्रिय) प्राइमेट्स हैं, जो मुख्य रूप से पूर्वोत्तर भारत में पाए जाते हैं।

यह विविधता भारत को प्राइमेट-विविध देशों में से एक बनाती है, हालांकि इनमें से कई प्रजातियाँ निवास स्थान के नुकसान और अन्य खतरों के कारण संवेदनशील या लुप्तप्राय हैं।

## बंदरों का आध्यात्मिक महत्व

बंदरों का आध्यात्मिक महत्व मुख्य रूप से हिंदू धर्म में बहुत गहरा और व्यापक है, जहाँ उन्हें साहस, भक्ति और शक्ति का प्रतीक माना जाता है। हालाँकि, अन्य संस्कृतियों और धर्मों में भी उनके विभिन्न प्रतीकात्मक अर्थ हैं।

## हिंदू धर्म में महत्व

हिंदू धर्म में बंदरों का सर्वोच्च आध्यात्मिक महत्व भगवान हनुमान के कारण है।

**भगवान हनुमान का स्वरूप:** हनुमान जी एक वानर (आधा मानव, आधा बंदर) देवता हैं, जिन्हें भगवान शिव का अवतार माना जाता है। वे भगवान राम के प्रति अपनी अटूट निष्ठा, सेवा और भक्ति के लिए पूजनीय हैं।

**शक्ति और बहादुरी के प्रतीक:** हनुमान जी अपनी अविश्वसनीय शक्तियों, साहस और निःस्वार्थ सेवा के लिए जाने जाते हैं। उनकी कथा, विशेष रूप से महाकाव्य रामायण में, बुराई पर अच्छाई की जीत में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

**पवित्रता:** इस धार्मिक जुड़ाव के कारण, भारत में बंदरों को अक्सर पवित्र माना जाता है। कई हिंदू मंदिरों, विशेषकर हनुमान मंदिरों के आसपास, बड़ी संख्या में बंदर पाए जाते हैं, जहाँ भक्त उन्हें भोजन देते हैं और उन्हें शुभ मानते हैं।

**मानव मन का प्रतीक:** कुछ हिंदू प्रतीकवाद में, बंदरों को मानव मन का प्रतीक माना जाता है, जो हमेशा बेचैन और अस्थिर रहता है। यह हमें मन पर नियंत्रण रखने और उसे शांत करने की शिक्षा देता है।

## अन्य धर्मों और संस्कृतियों में

**बौद्ध धर्म:** बौद्ध और जैन धर्म की कहानियों में भी बंदरों का उल्लेख मिलता है, जहाँ वे अक्सर नैतिक शिक्षा और करुणा की कहानियों में भूमिका निभाते हैं।

**पंचतंत्र की कहानियाँ:** भारतीय साहित्य जैसे 'पंचतंत्र' में बंदरों के चरित्रों का उपयोग नैतिक शिक्षा प्रदान करने के लिए किया जाता है।

**सामान्य प्रतीकात्मकता:** आध्यात्मिक और लोककथाओं में, बंदर अक्सर बुद्धिमत्ता, जिज्ञासा, चंचलता और सामाजिक मूल्यों का प्रतीक होते हैं। ■

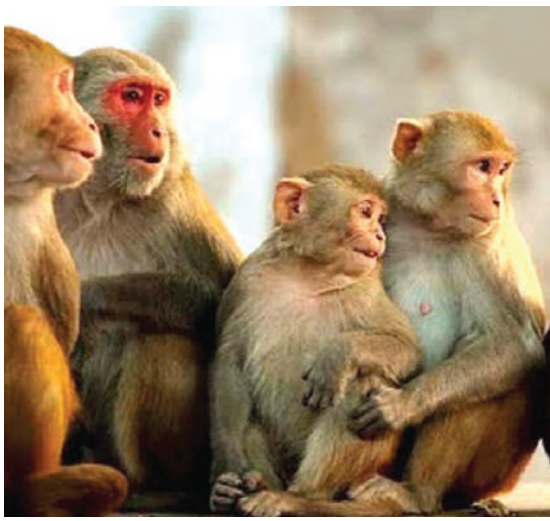

# विलुप्ति के कगार पर सरीसृपों की 30 फीसदी प्रजातियां

**दुनिया के द्वीपों पर रहने वाली सरीसृप प्रजातियां, जैसे छिपकलियां और कोमोडो ड्रैगन, विलुप्ति के कगार पर हैं, फिर भी वैज्ञानिक शोधों में उन्हें करीब-करीब अनदेखा किया जा रहा है।**

■ ललित मौर्या

दुनिया भर के द्वीपों में रहने वाली सरीसृप प्रजातियां जैसे छिपकलियां, कछुए, कोमोडो ड्रैगन आदि गंभीर खतरे में हैं। देखा जाए तो सरीसृपों की यह प्रजातियां मुख्य भूमि पर पाई जाने वाली प्रजातियों की तुलना में कहीं ज्यादा तेजी से विलुप्ति की ओर बढ़ रही हैं, फिर भी वैज्ञानिक शोधों में उन्हें करीब-करीब अनदेखा किया जा रहा है। यह चौंकाने वाला सच ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय सहित दुनिया के कई अन्य संस्थानों से जुड़े शोधकर्ताओं द्वारा किए एक नए वैश्विक अध्ययन में सामने आई है।

धरती की सतह का महज सात फीसदी हिस्सा इन द्वीपों के रूप में है, लेकिन यह जगह दुनिया की जैव-विविधता का सबसे अनमोल खजाना समेटे हुए हैं। अध्ययन के मुताबिक धरती पर पहचानी गई सरीसृपों की 12,000 में से एक-तिहाई प्रजातियां केवल इन्हीं द्वीपों तक सीमित हैं। इनमें गैलापागोस के विशाल कछुओं से लेकर इंडोनेशिया की कोमोडो ड्रैगन जैसी मशहूर प्रजातियां शामिल हैं।

देखा जाए तो धरती पर अलग-थलग पड़े ये द्वीप प्रकृति की प्रयोगशालाएं हैं, जहां प्रजातियां खास परिस्थितियों में अनोखे तरीके से विकसित होती हैं। लेकिन यही अलगाव इन प्रजातियों की सबसे बड़ी कमजोरी भी बन गया है।

जर्नल कंजर्वेशन साइंस एंड प्रैक्टिस में प्रकाशित इस अध्ययन के नतीजे दर्शाते हैं कि इन द्वीपों में रहने वाली 30 फीसदी सरीसृप प्रजातियों पर विलुप्ति होने का खतरा मंडरा रहा है। हालांकि दूसरी तरफ वैश्विक स्तर पर सरीसृपों की औसतन 12.1 फीसदी प्रजातियां विलुप्त होने की कगार पर हैं। हालांकि इसके बावजूद, 1960 से अब तक सरीसृपों पर प्रकाशित शोध में से महज 6.7 फीसदी ही द्वीपीय प्रजातियों पर केंद्रित हैं।

अध्ययन से जुड़े प्रमुख शोधकर्ता डॉक्टर रिकार्डो रोचा का प्रेस विज्ञप्ति में कहना है, संरक्षण के लिए किए जा रहे प्रयासों को द्वीपों और वहां की अनोखी सरीसृप प्रजातियों पर केंद्रित करना जरूरी है। वे उदाहरण देते हुए कहते हैं, "सोचिए, अगर आप कोमोडो द्वीप जाएं और वहां ड्रैगन ही न मिलें। क्या वह जगह वैसी रहेगी?"

उनका आगे कहना है, "द्वीपों के सरीसृप इन पारिस्थितिक तंत्रों की रीढ़ हैं। मेरे जन्म स्थान मदीरा द्वीप पर दीवार छिपकलियां कीड़े खाती हैं, पौधों का परागण करती हैं और फलों को फैलाने

में मदद करती हैं। अगर ये गायब हो जाएं, तो पूरा तंत्र हिल जाएगा।“

उनके मुताबिक कई द्वीपों पर छिपकलियां बिना किसी स्तनधारी शिकारी के बीच पनपीं। इसलिए उनमें खतरों से बचने के मजबूत व्यवहार विकसित ही नहीं हुए। ऐसे में खुली घूमने वाली बिल्लियों और अन्य बाहरी प्रजातियों का पहुंचना इनके लिए जानलेवा साबित हो रहा है।

उदाहरण के लिए, केवल मदीरा द्वीप पर एक अकेली बिल्ली साल में औसतन 90 से अधिक छिपकलियां खा जाती है। यह दिखाता है कि बाहरी प्रजातियां कैसे संवेदनशील द्वीपीय पारिस्थितिकी तंत्र को हिला सकती हैं।

शोध के मुताबिक दुनिया भर में सरीसृप उन कशेरुकी प्रजातियों में शामिल हैं जो मानव गतिविधियों से सबसे अधिक प्रभावित होती हैं। कृषि विस्तार, जंगलों की कटाई, प्रदूषण और विदेशी आक्रामक प्रजातियां इनके अस्तित्व के लिए बड़ा खतरे बन गए हैं।

## कौन-सी प्रजातियां सबसे ज्यादा उपेक्षित?

शोधकर्ताओं ने 1960 से 2021 के बीच द्वीपों और मुख्य भूमि में रहने वाले सरीसृपों पर हुए शोध की तुलना की है। उन्होंने यह भी देखा कि प्रजातियों का आकार, उनका फैलाव, भूगोल और सामाजिक–

**धरती की सतह का महज सात फीसदी हिस्सा इन द्वीपों के रूप में है, लेकिन यह जगह दुनिया की जैव-विविधता का सबसे अनमोल खजाना समेटे हुए हैं। अध्ययन के मुताबिक धरती पर पहचानी गई सरीसृपों की 12,000 में से एक-तिहाई प्रजातियां केवल इन्हीं द्वीपों तक सीमित हैं।**

आर्थिक स्थिति जैसे कारक शोध को कैसे प्रभावित करते हैं। नतीजा यह निकला कि बड़ी और ज्यादा फैलाव वाली प्रजातियों पर सबसे अधिक शोध होता है, जबकि छोटी, हाल ही में खोजी गई और ऊंचे द्वीपों में रहने वाली प्रजातियां लगभग अनछुई रह जाती हैं।

शोधकर्ताओं के मुताबिक दुनिया की कई सबसे अनोखी प्रजातियां, जो केवल द्वीपों पर पनपीं उनके बारे में सबसे कम जानकारी है। ज्ञान की यह कमी उन्हें और भी असुरक्षित बनाती है।

शोधकर्ताओं के मुताबिक अध्ययन में यह असमानता कई कारणों से हो सकती है। कई द्वीप बेहद दूर और पहुंच से बाहर हैं, इसलिए वहां शोध करना मुश्किल होता है। इसके अलावा, दुनिया भर में ध्यान आमतौर पर आकर्षक या चिकित्सकीय रूप से महत्वपूर्ण सरीसृपों पर जाता है, जबकि बाकी प्रजातियां पीछे रह जाती हैं। वहीं समृद्ध द्वीपीय देशों में अक्सर शोध के बजाय निवेश पर्यटन ढांचों पर होता है, जिससे जैव-विविधता को कम प्राथमिकता मिलती है।

रिपोर्ट के अनुसार, इंडो-मलायन क्षेत्र (इंडोनेशिया, फिलीपींस आदि) दुनिया के द्वीपों में सरीसृपों का सबसे महत्वपूर्ण हॉटस्पॉट हैं, लेकिन अध्ययन के मामले में यह सबसे पिछड़ा क्षेत्र है। यहां कई ऐसी भी प्रजातियां हैं जिन पर एक भी वैज्ञानिक अध्ययन मौजूद नहीं है।

मेडागास्कर जैसे उदाहरण चौंकाते हैं, धरती पर जमीन का महज 0.4 फीसदी हिस्सा होने के बावजूद यहां सरीसृपों की 450 से ज्यादा प्रजातियां मिलती हैं, यानी दुनिया में सरीसृपों की ज्ञात 3.8 प्रजातियां यहां हैं। इनमें से एक-चौथाई आईयूसीएन की संकट ग्रस्त प्रजातियों की लिस्ट में शामिल हैं।

## क्या हैं समाधान?

शोधकर्ताओं ने अपने इस अध्ययन में कई सुझाव भी दिए हैं, जैसे खतरे में पड़ी द्वीपीय प्रजातियों पर तुरंत और लक्षित शोध बढ़ाए जाएं। राष्ट्रीय संस्थानों और द्वीपीय समुदायों के बीच बराबरी की साझेदारी बनाकर स्थानीय क्षमता को मजबूत किया जाए। केवल अकादमिक शोध पर निर्भर न रहकर, एनजीओ, सरकारी एजेंसियों और स्थानीय संस्थानों की रिपोर्टों को भी शामिल किया जाए। साथ ही फंडिंग को सिर्फ पर्यटन ही नहीं, प्राकृतिक विरासत को बचाने की दिशा में भी ले जाया जाए। ■

# मिलिए जंगल के रंगबाज से

**मात्र दो फीट लंबा, 10 किलोग्राम वजन का, काली-सफेद चमड़ी वाला हनी बैजर दुनिया के सबसे निडर प्राणियों में से एक है। वह किसी से भिड़ सकता है। डर शब्द उसकी डिक्शनरी में ही नहीं है। वह तेंदुआ, चीता, शेर, ब्लैक मांबा, ब्लैक कोबरा, अजगर जैसे बेहद खतरनाक और विशालकाय जानवरों से पूंछ उठा कर भिड़ जाता है। वह मधुमक्खी के छत्तों को तोड़ कर उनका शहद खा जाता है और जरूरत पड़ने पर शेर द्वारा किये गए शिकार को भी, शेर के जबड़े से खिंचने में कोई गुरेज नहीं करता। आइए जानते हैं जंगल के इस रंगबाज, हनी बैजर के बारे में सब कुछ.....**

■ युगांतर प्रकृति नेटवर्क

हनी बैजर को दुनिया के सबसे निडर जानवरों में से एक माना जाता है। गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स ने भी इसे "दुनिया का सबसे निडर प्राणी" का खिताब दिया है। अपनी आक्रामकता, ताकत और अनोखी शारीरिक विशेषताओं के कारण यह अपने से बहुत बड़े और खतरनाक जानवरों से भी बिना डरे लड़ता है। इसे जंगल का रंगबाज भी कहा जाता है।

## हनी बैजर को निडर बनाने वाली कुछ खास बातें:-

**मोटी और ढीली त्वचा:** इसकी त्वचा बहुत मोटी, सख्त और ढीली होती है, जिससे यह अपने शरीर पर होने वाले हमलों से बच जाता है। शिकारी के जबड़े में फंसने पर भी यह आसानी से घूमकर पलटवार कर सकता है। जहर से लड़ने की क्षमता: यह जहरीले साँपों जैसे कोबरा के जहर के प्रति प्रतिरोधी होता है। अगर कोई जहरीला साँप इसे काट ले, तो यह कुछ समय के लिए बेहोश हो सकता है, लेकिन कुछ घंटों बाद ठीक होकर फिर से अपने काम में लग जाता है।

**घातक हमले:** जब इसे कोई खतरा महसूस होता है, तो यह भागने की बजाय तुरंत आक्रामक हो जाता है और दुश्मन के संवेदनशील हिस्सों पर हमला करता है। यह शेर, बाघ, भेड़िया, कछुआ, मगरमच्छ समेत अनेक बड़े जानवरों पर हमला करने में क्षण भर भी नहीं सोचता।

**अद्भुत फुर्ती:** छोटा होने के बावजूद यह बहुत फुर्तीला होता है और अपने दुश्मनों को चकमा दे सकता है। तेज़ पंजे और नुकीले दाँत: इसके पंजे और दाँत इतने तेज़ होते हैं कि यह इनसे बड़े से बड़े जानवरों को भी घायल कर सकता है और शिकार कर सकता है। यह बेहद बेरहम जानवर है। हमला करते वक्त यह अपनी बुद्धिमता का भी इस्तेमाल करता है।

**गुस्सैल और जिद्दी स्वभाव:** इसका स्वभाव बहुत गुस्सैल और जिद्दी होता है। एक बार यह किसी के पीछे पड़ जाए, तो उसका आसानी से पीछा नहीं छोड़ता। ऐसे अनेक वीडियो हैं, जिसमें कोई शेर, बाघ, लोमड़ी, भेड़िया जैसे बेहद खूंखार जानवर भाग रहे हैं और हनी बैजर उन्हें दौड़ा रहा है। वह मगरमच्छ को भी दौड़ा लेता है।

## हनी बैजर और जहर

हनी बैजर पर जहर का असर होता है, लेकिन बहुत कम। उन्हें पूरी तरह से प्रतिरक्षित कहना गलत होगा, लेकिन उनमें जहर के प्रति असाधारण रूप से मजबूत प्रतिरोधक क्षमता होती है। हनी बैजर इस प्रतिरोध को कई तरीकों से विकसित करते हैं:

आणविक अनुकूलनः शोध से पता चला है कि हनी बैजर के तंत्रिका तंत्र में कुछ आनुवंशिक उत्परिवर्तन होते हैं। ये उत्परिवर्तन जहरीले साँपों के न्यूरोटॉक्सिन (तंत्रिकाओं को प्रभावित करने वाले जहर) को उनकी मांसपेशियों की कोशिकाओं पर मौजूद रिसेप्टर्स से जुड़ने से रोकते हैं, जिससे लकवा नहीं होता है। मोटी और ढीली त्वचाः उनकी मोटी और ढीली त्वचा भी सुरक्षा प्रदान करती है। यह न केवल सांप के दांतों को पूरी तरह से घुसने से रोकती है, बल्कि अगर जहर अंदर चला भी जाए तो यह उसके फैलने की गति को धीमा कर देती है। सोकर ठीक होनाः जब कोई जहरीला सांप काटता है, तो हनी बैजर कुछ घंटों के लिए बेहोश हो जाते हैं या "सो जाते हैं"। इस दौरान, उनका शरीर जहर को निष्क्रिय करने और ठीक होने का काम करता है। कुछ घंटों बाद, वे उठकर वापस सामान्य हो जाते हैं और अक्सर सांप को खा भी लेते हैं। हालांकि, इसका मतलब यह नहीं है कि वे हमेशा सुरक्षित रहते हैं। अगर उन्हें बहुत अधिक मात्रा में जहर मिल जाए या कई बार काटा जाए, तो उनकी मृत्यु हो सकती है। लेकिन अपनी खास अनुकूलन क्षमता के कारण वे जहर से पैदा होने वाले खतरों से लड़ने में सक्षम होते हैं।

## हनी बैजर का भोजन

हनी बैजर एक सर्वाहारी जीव है, जिसका मतलब है कि वह मांसाहारी और शाकाहारी, दोनों तरह के भोजन खाता है। इसका नाम मधुमक्खी के छत्तों से शहद और लार्वा खाने के शौक के कारण पड़ा है। यह अपनी शिकार की तलाश में कभी भी निकल सकता है, लेकिन मानव आबादी वाले क्षेत्रों में यह रात में शिकार करता है।

## हनी बैजर का पसंदीदा भोजन...

**सांपः** यह जहरीले और बड़े सांपों, जैसे कोबरा और ब्लैक माम्बा का भी शिकार करता है और पूरा का पूरा खा जाता है।
**छोटे जानवरः** चूहे, गिलहरी जैसे छोटे स्तनधारी, पक्षी, मेंढक और छिपकली इसके पसंदीदा शिकार होते हैं।
**कीड़े-मकोड़ेः** बिच्छू, कीड़े, लार्वा और दीमक इसके आहार का एक बड़ा हिस्सा होते हैं।
**अन्य जीवः** यह कछुओं को भी अपने मजबूत जबड़ों से आसानी से खा सकता है।
**सफाई करनाः** यह दूसरे शिकारियों के छोड़े गए शिकार को भी खा लेता है।

## शाकाहारी भोजनः

**शहद और लार्वाः** यह मधुमक्खी के छत्तों पर हमला करके उनके शहद और लार्वा को खा जाता है।
**फल और सब्जियांः** यह जड़ें, कंद, मूल , जामुन और अन्य फल भी बड़े चाव से खाता है।
हनी बैजर की खाने की आदतें उसकी निडरता की वजह से और भी खतरनाक हो जाती हैं। यह अपने से कई गुना बड़े और खतरनाक जानवरों से भी शिकार छीनने में नहीं हिचकिचाता। ऐसे बहुत सारे वीडियो हैं, जिसमें दिख रहा है कि यह लोमड़ी से, तेंदुआ से, बाघ से शिकार छीनने का प्रयास करता है। यह बहुत तेज़ी से और बड़ी मात्रा में भोजन खा सकता है, जिसमें यह अपने शिकार के बाल, पंख, और हड्डियां तक पचा लेता है।

## हनी बैजर की आयु

हनी बैजर की उम्र उसके रहने की जगह पर निर्भर करती है। जैसे, अगर वह जंगल में में है तो प्राकृतिक वातावरण में हनी बैजर आमतौर पर 7 से 8 साल तक जीते हैं। उनके छोटे जीवनकाल का कारण शिकारियों से खतरा और चोट लगने का जोखिम होता है। लेकिन, अगर वह कैद में है तो अच्छी देखभाल के फलस्वरूप वह 24 से 26 साल तक भी जीवित रह सकते हैं।

## कहां पाये जाते हैं हनी बैजर

हनी बैजर मुख्य रूप से अफ्रीका और एशिया के कई हिस्सों में पाए जाते हैं। इनका वितरण क्षेत्र काफी विशाल है। ये अफ्रीका के सहारा रेगिस्तान के दक्षिणी हिस्से से लेकर पूरे उप-सहारा अफ्रीका में पाये जाते हैं। ये दक्षिण अफ्रीका से लेकर मोरक्को और अल्जीरिया तक पाए जाते हैं। एशिया में ये अरब प्रायद्वीप, ईरान और पश्चिमी एशिया से लेकर तुर्कमेनिस्तान और भारतीय उपमहाद्वीप तक फैले हुए हैं।

भारत में इन्हें ताडोबा अंधारी टाइगर रिजर्व और अन्य जंगलों में देखा गया है। हनी बैजर विभिन्न प्रकार के आवासों में रहने के लिए अनुकूलित होते हैं। ये रेगिस्तान और शुष्क क्षेत्र, घास के मैदान और खुले जंगल, पहाड़ी क्षेत्र आदि में पाये जाते हैं। अपनी लचीली प्रकृति के कारण वे कम वर्षा वाले क्षेत्रों से लेकर घने जंगलों तक, कई तरह के वातावरण में जीवित रह सकते हैं, बशर्ते उन्हें भोजन और छिपने के लिए पर्याप्त जगह मिले। ■

# यह तबाही हमारी भूलों का परिणाम

**हालात अब सामान्य नहीं रहे। स्थिति अत्यंत दुखद हो चुकी है। बारिश के इस मौसम में उत्तरी भारतीय उपमहाद्वीप ने जो तबाही देखी है, उसे मैं शब्दों में बयां नहीं कर सकती। विशाल इलाके जलमग्न हैं। घर, स्कूल और अस्पताल तबाह हो चुके हैं। सड़कें और अन्य बुनियादी ढांचे नष्ट हो गए हैं और खेतों में पानी भरा है।**

■ सुनीता नारायण

पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र में एक के बाद एक बादल फटने की घटना हुई हैं जिसके फलस्वरूप बड़े-बड़े पहाड़ ढह गए हैं। इसकी मानवीय कीमत विशाल है और इस नुकसान का मतलब समझने के लिए बाढ़ और तबाही के असली चेहरे की पहचान आवश्यक है। इस इलाके में हो रही अतिवृष्टि की तीव्रता असामान्य है। भारतीय मौसम विभाग के अनुसार अगस्त के महीने में, पंजाब में 31 में से 24 दिन भारी एवं अत्यधिक बारिश हुई। आईएमडी 24 घंटों में 115 मिमी से अधिक बारिश को भारी और 204 मिमी से अधिक बारिश को अत्यधिक भारी मानता है। यह केवल मूसलाधार बारिश नहीं, बल्कि बाइबिल में उल्लेखित प्रलय के समान है। हिमालयी राज्यों उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश और केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में भी यही स्थिति रही। हिमाचल प्रदेश में बारिश ने पिछले तीन महीनों में 90 प्रतिशत से अधिक दिनों तक राज्य की पहाड़ी ढलानों पर भारी और अत्यधिक भारी बारिश के साथ सभी पुराने रिकॉर्ड तोड़ दिए। इसके अलावा, बादल फटने के कारण आकस्मिक बाढ़ की घटनाएं भी हुई हैं। सरकारी आंकड़ों द्वारा 13 घटनाओं की पुष्टि की गई है, वहीं मीडिया द्वारा 10 अन्य घटनाओं की सूचना दी गई है। जून और अगस्त के महीनों में पंजाब, हिमाचल प्रदेश और जम्मू-कश्मीर में लगभग 50 प्रतिशत अधिक बारिश हुई है।

हालांकि अगर आप इसे साप्ताहिक औसत के संदर्भ में देखें, तो तबाही का पैमाना और भी स्पष्ट हो जाता है। उदाहरण के लिए पंजाब में अगस्त के आखिरी पखवाड़े में सामान्य से औसतन 400 प्रतिशत अधिक बारिश हुई है। पंजाब से थोड़ा ऊंचाई पर स्थित हिमाचल प्रदेश में लगातार बारिश हुई है और 28 अगस्त से 3 सितंबर के बीच राज्य में साप्ताहिक औसत से 300 प्रतिशत अधिक बारिश दर्ज हुई है। इसी के फलस्वरूप हम इतनी बड़ी तबाही देख रहे हैं, जिसमें आजीविका, संपत्ति और वर्षों का विकासात्मक निवेश नष्ट हो रहा है। ऐसा क्यों हो रहा है? इसमें कोई शक नहीं कि यह एक जलवायु आपातकाल है लेकिन साथ ही यह इस बात पर भी निर्भर करता है कि हम विकास के नाम पर क्या कर रहे हैं। बिना परिणामों की चिंता किए हुए विकास की लापरवाही इस विनाश में स्पष्ट दिखाई दे रही है।

सच तो यह है कि हमारी दुनिया जलवायु परिवर्तन को बढ़ावा देने वाले उत्सर्जन को कम करने की दिशा में संघर्ष कर रही है इसलिए ये प्रभाव आगे चलकर और भी घातक होंगे। लेकिन अगर हम इस बात को अच्छी तरह से समझ लें कि निर्णायक बिंदु यही है तो हम भविष्य में निर्माण इस तरह से कर सकते हैं ताकि अगली बाढ़ या बादल फटने की घटना से कम नुकसान हो।

आइए पहले समझते हैं कि जलवायु कैसे बदल रही है। सच तो यह है कि इस निराशा भरे मौसम का एक बड़ा कारण मौसम प्रणाली में पड़ा व्यवधान है और इसका मुख्य कारण जलवायु परिवर्तन है। हम जानते हैं कि गर्मी बढ़ने के साथ बारिश अधिक होगी और यह बारिश कम दिनों में होगी। पिछले मौसम में हमने यही देखा है कि पूरे मौसम की बारिश कुछ ही घंटों में हो गई। लेकिन मौसम के इस स्वरूप के पीछे कई कारण हैं। हम जानते हैं कि पश्चिमी विक्षोभ एक प्राकृतिक मौसमी घटना है जहां

भूमध्य सागर से आने वाली हवाएं हमारे क्षेत्र में चक्रवाती गतिविधियां और बारिश लाती हैं। इस मॉनसून के मौसम में पश्चिमी विक्षोभों को मानो बुखार चढ़ गया हो।

दक्षिण-पश्चिम मॉनसून के दौरान कभी-कभार आने वाले एक या दो तूफानों के बजाय इस साल सितंबर के पहले सप्ताह तक 19 विक्षोभ आ चुके हैं। ये हवाएं वस्तुतः मॉनसून की हवाओं से टकरा रही हैं और इसके कारण उत्तरी भारत और पाकिस्तान में विनाशकारी वर्षा हो रही है।

यह स्पष्ट नहीं है कि ऐसा क्यों हो रहा है, सिवाय इसके कि पश्चिमी विक्षोभ जेट स्ट्रीम (आर्कटिक से आने वाली हवाओं) से जुड़ा है। जैसे-जैसे यह आर्कटिक पवन प्रणाली जलवायु परिवर्तन के कारण कमजोर होती जा रही है, वैसे-वैसे यह पश्चिमी विक्षोभों सहित अन्य परस्पर जुड़ी वैश्विक पवन प्रणालियों को बाधित कर रही है। इस साल, अरब सागर से उत्पन्न होने वाली पवन प्रणालियों के साथ कुछ और भी घटित रहा है और ये हवाएं बंगाल की खाड़ी से आने वाली मॉनसूनी हवाओं की विपरीत दिशा में दबाव डाल रही हैं। यह एक साथ कई कारकों के संयोजन का परिणाम है जैसे कि महासागरों के गर्म होने से लेकर आर्कटिक क्षेत्र के गर्म होने और भूमध्य रेखा तथा उत्तरी ध्रुव के बीच घटते तापमान के अंतर तक। यह अस्थिरता अब आसमान से गिरने वाली बाढ़ के रूप में हम पर बरस रही है। ऐसा लगता है कि प्रकृति बदला लेने पर उतारू है।

ये हालात यहीं खत्म नहीं होने वाले बल्कि और भी बदतर होने वाले हैं। यही कारण है कि हम लापरवाह नहीं हो सकते। पहले की तरह हम जलवायु परिवर्तन को दोष देते हुए भाग्यवादी रुख अख्तियार कर यह नहीं कह सकते कि मनुष्य आखिर क्या कर सकता है? यह विनाश दैवीय नहीं है। यह समस्या पूरी तरह से हमारी अपनी ही बनाई हुई है और आज हमारे दरवाजे पर खड़ी सच तो यह है कि जलवायु परिवर्तन हमारे आर्थिक विकास और मानवीय लालच के कारण वायुमंडल में छोड़े गए उत्सर्जन का नतीजा है। हम जानबूझकर और मनमाने ढंग से विकास के अपने तरीके से इस समस्या को और बढ़ा रहे हैं। हम नदियों के बाढ़ के मैदानों में निर्माण कर रहे हैं और जहां जरूरी है कि वहां जल निकासी की योजना नहीं बना रहे हैं। हम संवेदनशील पर्वतीय क्षेत्रों पर अतिक्रमण कर रहे हैं और हम वहां घर, सड़कें और जलविद्युत इकाइयां बना रहे हैं, बिना यह सोचे कि ये क्षेत्र भूकंप की दृष्टि से सक्रिय हैं और ये दुनिया की सबसे नई पर्वत श्रृंखलाएं हैं जिनकी ढलानें भूस्खलन के लिए मुफीद हैं।

मैं आगे और भी बातें कर सकती हूं लेकिन मुझे उम्मीद है कि जब मैं यह कहती हूं कि बस बहुत हो गया तो आप मेरी पीड़ा समझेंगे। अनुकूलन और लचीलेपन की जरूरत पर सिर्फ बातें करने का समय अब खत्म हो गया है। हम जलवायु परिवर्तन के युग में जी रहे हैं।

हम ऐसे विनाशकारी दौर से गुजर रहे हैं जो बड़े-बड़े पहाड़ों को भी अपने घुटनों पर ला देगा। मानवीय अहंकार, इनकार और नासमझी का समय अब खत्म हो गया है। आइए इस बात को ठीक से समझ लें। ■

• पक्षी जगत •

# नेतरहाट, बेतला, दलमा और साहेबगंज में 'बर्ड हॉटस्पॉट' की तैयारी

**झारखंड के नेतरहाट, बेतला नेशनल पार्क, दलमा अभयारण्य और साहेबगंज को आईआईटीडीओ (इंडियन इंटरनेशनल ट्रेड डेवलपमेंट ऑर्गनाइजेशन) टीम जनवरी 2026 से बर्ड हॉटस्पॉट बनाने के लिए वैज्ञानिक सर्वे करेगी, जिससे पर्यटन और संरक्षण बढ़ेगा।**

■ युगांतर प्रकृति नेटवर्क/एजेंसी

झारखंड की धरती हमेशा से अपनी हरियाली, शांत वातावरण और जैव-विविधता के लिए जानी जाती रही है। अब इसी प्राकृतिक संपदा को नई पहचान देने की तैयारी है। राज्य के 4 प्रमुख वन क्षेत्रों-नेतरहाट, बेतला नेशनल पार्क, दलमा अभयारण्य और साहेबगंज क्षेत्र को 'बर्ड हॉटस्पॉट' बनाने की दिशा में बड़ा कदम उठाया जा रहा है। यहां पहली बार वैज्ञानिक पैमाने पर पक्षियों की गणना और अध्ययन किया जाएगा, जिसका असर भविष्य में पर्यटन और पर्यावरण संरक्षण दोनों पर पड़ेगा। इस महत्वाकांक्षी अभियान की जिम्मेदारी आईआईटीडीओ (इंडियन इंटरनेशनल ट्रेड डेवलपमेंट ऑर्गनाइजेशन) की विशेषज्ञ टीम को दी गई है। टीम जनवरी 2026 से सर्वे की शुरुआत करेगी और हर अभयारण्य में लगभग 8-10 दिन रुककर पक्षियों की उपस्थिति, प्रवास पैटर्न, प्रजातियों की संख्या और उनके व्यवहार को रिकॉर्ड करेगी। यह अध्ययन अंतरराष्ट्रीय मानकों के आधार पर तैयार होगा, जिससे झारखंड को ग्लोबल बर्ड-वॉचिंग मैप पर नई पहचान मिल सकती है।

राज्य पर्यटन विभाग ने चारों जिलों पूर्वी सिंहभूम, साहेबगंज, लातेहार और गुमला के प्रशासन से सहयोग मांगा है। अधिकारियों के अनुसार, सर्वे टीम को निर्बाध सुविधा, सुरक्षा और फील्ड सपोर्ट उपलब्ध कराया जाएगा। विभाग का मानना है कि यह प्रोजेक्ट न सिर्फ पर्यावरण संरक्षण में मदद करेगा बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में ईको-टूरिज्म को भी बढ़ाएगा, जिससे स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के नए रास्ते खुलेंगे। दलमा और बेतला जैसे क्षेत्रों में सर्दियों के मौसम में यूरोप और एशिया के ठंडे इलाकों से दर्जनों प्रवासी पक्षी आते हैं। इन्हें स्थानीय लोग 'विदेशी मेहमान' भी कहते हैं। इनमें ग्रे लेग गूज, पिंटेल डक, ब्राह्मणी बतख, कूट,

टील, हेरॉन, ईग्रेट और किंगफिशर जैसी कई रंग-बिरंगी और दुर्लभ प्रजातियां शामिल हैं। वैज्ञानिक सर्वे से इन पक्षियों की सही संख्या, उनकी पसंदीदा जगहें और उनके लिए जरूरी पर्यावरण को समझने में बड़ी मदद मिलेगी।

विशेषज्ञ उम्मीद कर रहे हैं कि यह परियोजना झारखंड को वैश्विक पक्षी-पर्यटन के केंद्र के रूप में मजबूत करेगी। वैज्ञानिक रिपोर्ट के आधार पर सरकार नई संरक्षण योजनाएँ तैयार कर सकेगी और पक्षियों के लिए सुरक्षित आवास विकसित कर पाएगी। साथ ही इन अभयारण्यों में बर्ड-वॉचिंग ट्रेल, प्रकृति भ्रमण और पर्यावरण शिक्षा के नए अवसर भी खुलेंगे। ■

# एआई से चित्रकारों को कोई नुकसान नहीं

**अखिलेश**
*वरीय चित्रकार*

मैं अखिलेश हूं। मैंने चित्रकला में डिप्लोमा इंदौर स्कूल ऑफ आर्ट से किया है। यह बड़ा आर्ट स्कूल है। वहां से प्रमुख चित्रकार देश के निकले हैं। एमएफ हुसैन सहित कई अन्य चित्रकारों ने भारतीय चित्रकला की दशा और दिशा निर्धारित की है। लगातार फील्ड में काम कर रहा हूं। मैं इस वर्ष 70 वर्ष का हो गया हूं। चित्रकारी करते मुझे 50 साल हो गये।

मैंने चित्रकला को अनजाने में चुना। मेरे पिता खुद चित्रकार थे और देश के पहले गोल्ड मेडलिस्ट थे। घर में पूरा वातावरण चित्रकला का रहा। मेरे भाई-बहन सभी लोग चित्र बनाया करते थे। चूंकि सब लोग वही काम कर रहे हैं तो मैं भी चित्र बनाने लगा। हालांकि मेरा बाहर खेलने-कूदने पर ज्यादा ध्यान रहता था, बजाय चित्र बनाने के। मैं चित्र बनाने से दूर रहता था। मेरे ख्याल से चित्र बनाने की प्रक्रिया जब शुरू हुई, वह अनजाने में हुई। पिता हमें छुट्टियों में घूमने ले जाया करते थे। अजंता एलोरा की गुफाओं को मैंने बचपन से ही देखा। तो अनजाने में ही सारी चीजें देखते-सीखते रहे।

मैंने एम.एफ. हुसैन पर बायोग्राफी लिखी है। इसे लेकर हुसैन साहब का कहना था कि हमारी ऑटोबायोग्राफी में तुम्हारी बायोग्राफी ज्यादा पॉपुलर हो गई, क्योंकि उन्होंने अपनी ऑटोबायोग्राफी लिखी तो उसके बाद मैंने लिखी। 6 महीने में पहला एडिशन लिख दिया था। 6 महीने बाद ही दूसरा एडिशन आया। अभी हाल में ही उसका तीसरा एडिशन निकला है। वो इस बात से बेहद खुश थे कि मैंने उनकी बायोग्राफी इतनी अच्छी लिखी है और इतना पॉप्युलर हुई। वह चाहते थे कि लंदन में इसका अंग्रेजी वर्जन रिलीज करें। उन्होंने मुझसे कहा कि भाई इसे आप अंग्रेजी में तैयार करें। हम इसे लंदन में रिलीज करेंगे। दुर्भाग्य से जब तक अंग्रेजी में तैयार होता, उनका निधन हो चुका था।

झारखंड मैं पहले भी आ चुका हूं। एक बार मैंने रांची में एक प्रदर्शनी भी की थी। जमशेदपुर में भी पहले आया था। साइड कैंप हुआ था। बोकारो में मैंने इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल का उद्घाटन किया था। इस तरह झारखंड आना-जाना लगा रहा है। धनबाद में भी एक आर्ट एग्जीबिश आर्गनाइज किया था। झारखंड के साथ काफी हद तक एक संबंध बनता रहा है।

जब रांची से हम लोग जमशेदपुर आ रहे थे तो रास्ते में हमने एक मोहित करने वाला दृश्य देखा। इतना विशाल भू-भाग, हर तरफ हरियाली। चूकि, धान पक गया है तो पीला दिखाई पड़ रहा था। चारों तरफ पहाड़ ही पहाड़। यह बहुत ही दिलचस्प लगा मुझे। जितनी खुली जगह है, यहां आजकल दूसरे प्रदेशों में इस तरह की चीजें दिखाई देना बंद हो गई है।

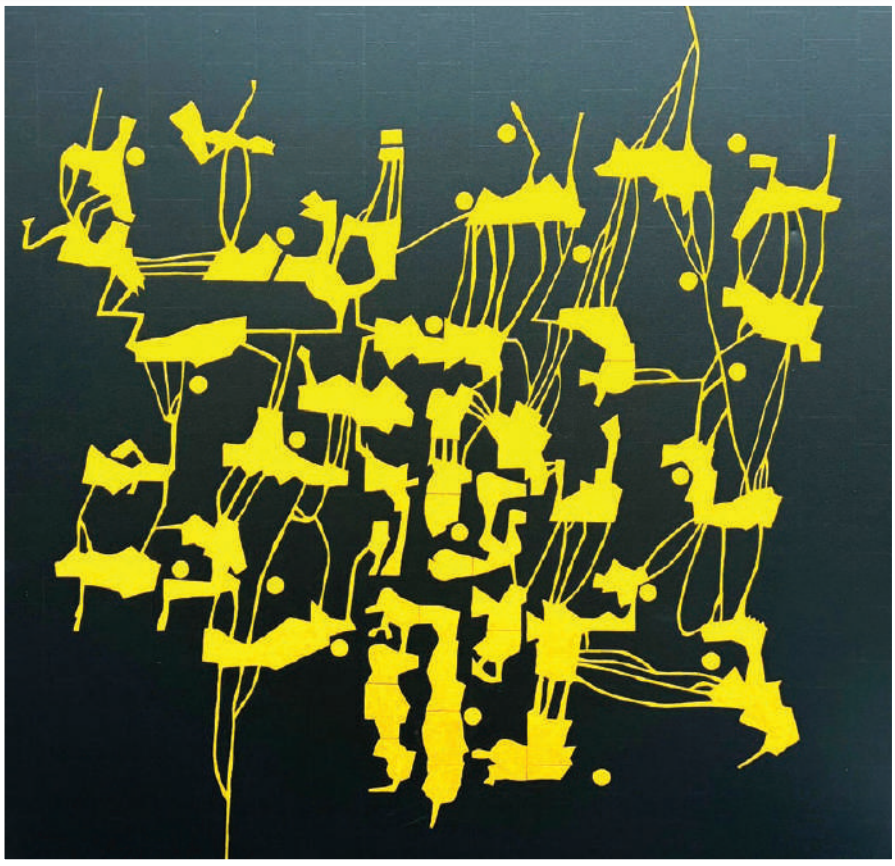

विकास के नाम पर जिस तरह से शहर बढ़ते जा रहे हैं वैसा मुझे यहां देखने को नहीं मिला। यहां का वातावरण शानदार है। वन विभाग के गेस्ट हाउस से जब मैं सोकर सुबह उठता हूं तो इतने वृक्ष चारों तरफ लगे हैं और इतनी तरह के पक्षी बैठते हैं कि उनकी कलरव सुनने को मिलती है। पक्षियों के कलरव सुनना अब दुर्लभ चीज हो गई है।

चित्रकारी करते हुए मुझे लगभग 50 साल तो हो ही गये। 1976 में मैंने पहला प्रदर्शनी किया था। तब 20 साल का था। उस समय एक ड्राइंग प्रदर्शनी की थी। मेरी ड्राइंग 110 फीट की थी। यह मेरे लिए नया अनुभव था, क्योंकि मैं फील्ड में प्रवेश कर रहा था। मेरा विचार था कि एंट्री ऐसी होना चाहिए कि सब लोग नोटिस करें।

मेरी बनारस पर पेंटिग्स की एक पूरी सीरीज है। उसका शीर्षक थाः हैव इज समथिंग टू डू दिस बनारस। जो चित्र मैं बना रहा था, वह बनारस पर बेस्ड था और मैं बनारस कभी गया नहीं था। मेरे लिए यह बहुत आश्चर्य की बात है कि जब मैं बनारस में उन चित्रों को दिखाया तो जितने पत्रकार और लोग टीवी में आए थे, उन सभी का कहना था कि हां, यही बनारस है। वह सारे चित्र जो हैं अमूर्त हैं। यह एक मेरे लिए खुशी की बात थी। वो चित्र मुझे बहुत पसंद है। संयोग से उस पूरी श्रृंखला के दो ही चित्र मेरे पास हैं।

मुझे नहीं लगता कि एआई खतरा है। मेरे लिए ही नहीं, बल्कि आगे आने वाले जेनरेशन के लिए भी। एआई की जो समस्या है, वह सीधे चीजों पर काम करता है। उसके पास कल्पना नाम की कोई चीज नहीं है। जो चित्र बनते हैं, कल्पना से बनते हैं। उसमें जो भाव पैदा होगा वह मेडिएशन से पैदा होगा और एआई के पास सिर्फ स्मृति है। स्मृति से रचा नहीं जा सकता, स्मृति से दोहराया जा सकता है। इसलिए एआई कलाओं के लिए तो खतरनाक बिल्कुल भी नहीं है। बल्कि उसका इस्तेमाल कोई आर्टिस्ट करना चाहता है, जैसे फिल्मों में करते हैं और हो ही रहा है, बहुत अच्छा इस्तेमाल हो रहा है उसका।

नई जनरेशन के बच्चों के साथ मेरा बहुत गहरा संबंध है। पिछले साल मैंने एक प्रदर्शनी की थी दिल्ली में। इसमें पूरे हिंदुस्तान से 100 युवा कलाकार चुने गए थे और उनकी प्रदर्शनी लगी। नौजवान लगन से कार्य करें। मैं देखता हूं कि युवा बहुत ज्यादा अपने काम को लेकर जागरूकता भी हैं, तो मेहनत से कम करें बाकी फल की चिंता ना करें। ■

*(वरीय चित्रकार **अखिलेश** ने जैसा प्रधान संपादक **आनंद सिंह** को बताया)*

# बाल मेला जैसे आयोजन में आना सुखद अनुभवः राज्यपाल

**झारखंड के राज्यपाल संतोष गंगवार ने इस बात पर चिंता जताई कि आज के जमाने के बच्चे मोबाइल की दुनिया में कैद होकर रह गये हैं। समाज में क्या हो रहा है, इसकी उन्हें कोई चिंता नहीं। बड़ी चुनौती ये है कि हम लोग कैसे उन्हें समाज से जोड़ें। वह साकची में चल रहे चतुर्थ बाल मेला में बोल रहे थे।**

**▪ युगांतर प्रकृति नेटवर्क**

राज्यपाल ने कहा कि बाल मेला जैसे आयोजन में आना सुखद अनुभव है। यह मेला बचपन की मासूमियत और भविष्य की दिशा के बारे में बात करता है। बच्चों के अधिकारों और विकास के बहुत काम करना शेष हैं। खास कर झारखंड में बहुत काम करने की जरूरत है। झारखंड में कुपोषण बड़ी समस्या है। कुपोषण को दूर करने के लिए जो प्रयास करने हैं, उन्हें तीव्र गति से करना होगा।

राज्यपाल ने कहा कि बाल मेला केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि समाज के सभी वर्गों—माता-पिता, शिक्षक, डॉक्टर, नर्स, जन-प्रतिनिधि, सामाजिक संस्थाएँ, कॉरपोरेट जगत, मीडिया और अन्य नागरिक समाज को एक मंच पर लाने का माध्यम बन रहा है। बच्चों के विकास में स्नेह, पोषण, शिक्षा, सुरक्षा और अवसर की उपलब्धता, ये पाँच आधार स्तंभ हैं जिन पर एक समृद्ध और सशक्त राष्ट्र की नींव रखी जाती है।

इसके पूर्व उन्होंने 40 पन्नों वाली बहुरंगी स्मारिका का विमोचन किया। इस स्मारिका का संपादन आनंद सिंह ने किया है। संपादक मंडल के सदस्यों

**बाल मेला केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि समाज के सभी वर्गों—माता-पिता, शिक्षक, डॉक्टर, नर्स, जन-प्रतिनिधि, सामाजिक संस्थाएँ, कॉरपोरेट जगत, मीडिया और अन्य नागरिक समाज को एक मंच पर लाने का माध्यम बन रहा है। बच्चों के विकास में स्नेह, पोषण, शिक्षा, सुरक्षा और अवसर की उपलब्धता, ये पाँच आधार स्तंभ हैं जिन पर एक समृद्ध और सशक्त राष्ट्र की नींव रखी जाती है।**

**-राज्यपाल**

में डॉ. त्रिपुरा झा, चंद्रदीप पांडेय और अनीता शर्मा शामिल हैं। राज्यपाल को उनका पोट्रैट और बाल मेला से संबंधित चित्र भेंट किये गए। बाल मेला से संबंधित चित्र जाने-माने आर्टिस्ट विप्लव दा ने बनाया है जबकि उनका पोट्रैट दीपांकर कर्मकार ने बनाया है।

जमशेदपुर पश्चिमी के विधायक सरयू राय ने कहा कि बाल मेला का पहला आयोजन 2022 में किया गया। 2020-21 में जब लॉकडाउन था, उनका निवास किचेन में बदल गया था। हजारों लोगों के लिए भोजन बनता था। साथी-सहयोगी जान जोखिम में डाल कर भोजन वितरण करते थे। दो वर्षों में हमने देखा कि ज्यादातर बच्चे ही कोरोना के प्रतिकूल शिकार हुए। यह उनकी मानसिकता में भी परिलक्षित हो रहा था। बच्चों का विकास सही तरीके से हो, इसे ध्यान में रख कर 14 नवंबर को बाल दिवस के दिन इसकी शुरुआत की गई। विश्व बाल दिवस 20 नवंबर को मनाया जाता है, उस दिन बाल मेला का समापन होता है।

सरयू राय ने कहा कि बच्चे सशक्त हों, मेधावी हों, देश को आगे बढ़ाएं, यही हमारी सोच थी। इस बाल मेला में सरकारी-निजी विद्यालयों ने बच्चे तो भेजे ही, प्रशिक्षक भी भेजे। हर वो प्रतियोगिता, जो जमशेदपुर में होती है, इस बाल मेले में भी होती है। अगला बाल मेला किसी बड़े स्थान पर करेंगे ताकि झारखंड भर की सहभागिता हो सके। स्वागत भाषण गोविंद दोदराजका ने दिया। उन्होंने कहा कि सरयू राय इस राज्य के सबसे बौद्धिक विधायक हैं। यह बाल मेला नगर की पहचान बन गई है।

# बाल मेले से रचनात्मक दिशा तय हो रही है: अर्जुन मुंडा

▪ युगांतर प्रकृति नेटवर्क

झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री अर्जुन मुंडा ने पूर्वी सिंहभूम जिला को बाल मित्र जिला बनाने के संबंध में सरयू राय द्वारा प्रस्तुत घोषणापत्र का स्वागत किया है। 7 दिनों तक चले बाल मेला के समापन समारोह के मुख्य अतिथि के रुप में अर्जुन मुंडा ने कहा कि इस मेले से एक रचनात्मक दिशा तय हो रही है। हमें अपनी सहभागिता सुनिश्चित करनी

**नए बच्चों का बालपन समझ में आता है। इस समय का उपयोग उस शिशु पर ही नहीं बल्कि समाज पर भी निर्भर करता है, परिवेश पर निर्भर करता है कि शिशु कैसा होगा। बालपन से बांकपन में जब लोग जाते हैं तब एहसास होता है कि उन्होंने क्या किया। फिर वह नई ऊंचाईयों को छूने के लिए तत्पर हो जाता है। भारतीय जीवन दर्शन में इसका अहम मूल्य है। हम कई चीजों में बेहद संवेदनशील होते हैं। परिवेश बदल रहा है। हालात बदल रहे हैं।**

**-अर्जुन मुंडा**

होगी। आयोजन में जुड़ना अहम है, आना-जाना नहीं। अच्छी बात यह है कि लोग जुड़ रहे हैं। हर किसी के जीवन में बालपन रहा है।

अर्जुन मुंडा ने कहा कि नए बच्चों का बालपन समझ में आता है। इस समय का उपयोग उस शिशु पर ही नहीं बल्कि समाज पर भी निर्भर करता है, परिवेश पर निर्भर करता है कि शिशु कैसा होगा। बालपन से बांकपन में जब लोग जाते हैं तब एहसास होता है कि उन्होंने क्या किया। फिर वह नई ऊंचाईयों को छूने के लिए तत्पर हो जाता है। भारतीय जीवन दर्शन में इसका अहम मूल्य है। हम कई चीजों में बेहद संवेदनशील होते हैं। परिवेश बदल रहा है। हालात बदल रहे हैं। इनके बीच हमें इस बात को ध्यान में रखना होगा कि हम न सिर्फ वस्तु बल्कि व्यक्तित्व का भी निर्माण करें। हमें अपनी परंपरा का दायित्व भी निभाना है। यह हमारे जीवन में परिलक्षित भी होना चाहिए। बाल मेला से सकारात्मक वातावरण का निर्माण हुआ है। इस दौर में, जब आत्मीयता संस्कारविहीन होता चला जा रहा है, यहां सुकून मिला।

जमशेदपुर पश्चिम के विधायक और मेला के संरक्षक सरयू राय ने कहा कि 7 दिनों तक चले इस मेले में कुल 18 प्रकार के इवेंट हुए। हजारों बच्चों ने हिस्सा लिया। 7 दिनों में जमशेदपुर के विभिन्न हिस्सों से 10 हजार से ज्यादा बच्चे आए। 42 स्टॉल लगाए गये। उन्होंने कहा कि बच्चों में हुनर है। उन्हें तराशने का काम किया जाए तो उनका भविष्य उज्ज्वल हो जाएगा। जो बच्चे स्कूल नहीं जा पा रहे हैं, कूड़ा चुनने का काम करते हैं, उन्हें भी इस मेले में शामिल किया गया है। श्री राय ने 14 नवंबर से अब तक बाल मेला में क्या-क्या हुआ, उसके बारे में भी जानकारी दी। उन्होंने जमशेदपुर घोषणा पत्र को पढ़ा और आमजन को समर्पित किया।

# गौर से पढ़िए
# युगांतर प्रकृति
## हमारे 20 सवालों के जवाब दीजिए
## और, पाइए आकर्षक पुरस्कार

**प्रथम पुरस्कार-501 रुपये नकद**

**द्वितीय पुरस्कार-351 रुपये नकद**

**तृतीय पुरस्कार-251 रुपये नकद**

### नियम और शर्तें

1. आपको युगांतर प्रकृति का यह अंक बेहद गौर से पढ़ना है।
2. इसी अंक में प्रकाशित विभिन्न लेखों से हम 20 सवाल करेंगे। उन 20 सवालों के जो सही-सही जवाब देंगे, उन्हें नकद पुरस्कार दिया जाएगा।
3. अगर 20 में से 20 सवालों के सही जवाब कई लोग देते हैं तो पुरस्कार उन्हें मिलेगा, जिनका जवाब सबसे पहले आएगा। यानी, जो पहले जवाब देंगे, वो पुरस्कार के हकदार होंगे।
4. जवाब सिर्फ ई-मेल के माध्यम से ही स्वीकार किये जाएंगे। ई-मेल आईडी है yugantarprakriti@gmail.com
5. कृपया अपनी प्रविष्टि के साथ अपना नाम, घर का पूरा पता, मोबाइल नंबर, एक रंगीन फोटो, बैंक खाता अथवा यूपीआई आईडी अथवा क्यूआर कोड अवश्य भेजें।
6. विजेताओं को धनराशि सीधे उनके खाते में भेजी जाएगी और अगले अंक में उनकी तस्वीर के साथ उनके नाम की घोषणा की जाएगी।
7. इस प्रतियोगिता में कोई भी हिस्सा ले सकता है। उम्र, लिंग का कोई बंधन नहीं है।
8. इस प्रतियोगिता में युगांतर प्रकृति परिवार के सदस्य हिस्सा नहीं ले सकते।
9. निर्णायक का फैसला अंतिम और बाध्यकारी होगा। उसे किसी भी सूरत में, कहीं भी चुनौती नहीं दी जा सकती है।

### पढ़ो और पुरस्कार पाओ

1. हनी बैजर सबसे ज्यादा कहां पाया जाता है?
2. लड़ते वक्त हनीबैजर गुर्राता है या नहीं?
3. चित्रकला के क्षेत्र में अखिलेश कौन हैं?
4. एमएफ हुसैन की बायोग्राफी किसने लिखी?
5. झारखंड में हाथियों की संख्या बढ़ी है या घटी है?
6. क्या चित्रकला को एआई से कोई नुकसान है?
7. बर्ड हॉटस्पॉट क्या होता है?
8. झारखंड में नेतरहाट, बेतवा, दलमा आदि में क्या बनने जा रहा है?
9. जमशेदपुर क्षेत्र के जिला वन अधिकारी का क्या नाम है?
10. कृषि विस्तार, जंगलों की कटाई आदि से सरीसृप समूहों पर क्या असर पड़ा है?
11. भारत में बंदरों की कितनी प्रजातियां पाई जाती हैं?
12. बंदरों का क्या है आध्यात्मिक महत्व?
13. 2014 के बाद भारत में चीतों की क्या स्थिति है?
14. जल में आर्सेनिक न हो तो क्या होगा और जरूरत से ज्यादा मात्रा में आर्सेनिक हो तो मानव शरीर पर क्या असर पड़ेगा?
15. शहरी नियोजन से सबसे ज्यादा किस चीज की दिक्कत हुई है?
16. दिल्ली की हवा अभी कितनी प्रदूषित हो चुकी है?
17. ग्रेडेड रिस्पांस प्रोग्राम क्या है और इसके सुझाव क्या हैं?
18. प्रदूषण के प्रमुख कारकों के नाम बताएं?
19. भारत के सबसे ज्यादा प्रदूषित 15 शहरों के नाम बताएं?
20. दुनिया में हर साल कितने हेक्टेयर में पेड़ कटते हैं?

# युगांतर न्यूज

## एक ऐसा न्यूज पोर्टल जिसमें आपको मिलेंगी

# राजनीति, हेल्थ और पर्यावरण की खबरें

www.yugantarnews.in पर पढ़ें

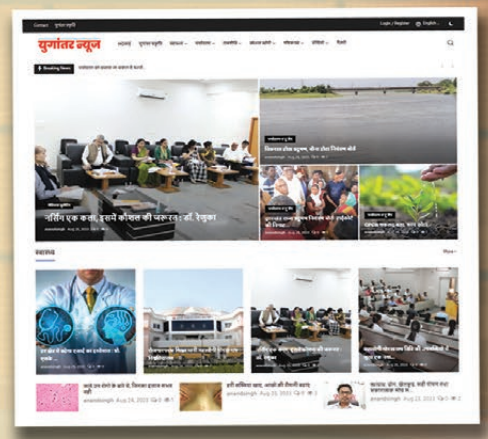

हमारा YouTube Channel देखें yugantarnews

*With Best Compliments From*

# दामोदर बचाओ आंदोलन

झारखण्ड सरकार
GOVERNMENT OF JHARKHAND
झारखण्ड 25
अनंत संभावनाओं की ओर
उलगुलान के महानायक
भगवान
बिरसा मुंडा
की 150वीं जयंती
पर 25 वर्ष का
युवा झारखण्ड धरती आबा
को नमन करता है
जोहार
उलिहातू
झारखण्ड के खूंटी स्थित उलिहातू की पहाड़ियों और जंगलों में जन्मा एक ऐसा महानायक, जिसने अपने साहस और संघर्ष से ब्रिटिश शासन को चुनौती दी। वे बिरसा मुंडा थे, जिन्हें उनके अनुयायियों ने धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा के रूप में पूजा।
बिरसा मुंडा ने आदिवासियों के अधिकारों के लिए संघर्ष का बिगुल बजाया, उनका उद्देश्य स्पष्ट था। लोगों को उनकी भूमि और अधिकार वापस दिलाना।
बिरसा मुंडा के क्रांतिकारी विचारों से विचलित हो कर ब्रिटिश शासकों ने उन्हें गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया। जेल में ही 09 जून 1900 को धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा शहीद हो गए।
लेकिन उनके उलगुलान का संदेश थमा नहीं। बिरसा मुंडा समेत वीर पुरखों के आदर्शों पर चल कर लंबे संघर्ष और बलिदान के बाद आंदोलनकारियों ने झारखण्ड अलग राज्य का सपना पूरा किया। आज धरती आबा का युवा झारखण्ड हम सभी के समक्ष है।
श्री संतोष कुमार गंगवार
माननीय राज्यपाल, झारखण्ड
श्री हेमन्त सोरेन
माननीय मुख्यमंत्री, झारखण्ड
सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, झारखण्ड सरकार